सांध्य दैनिक 4PM

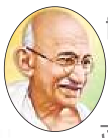

विश्वास को हमेशा तर्क से तौलना चाहिए। जब विश्वास अंधा हो जाता है तो मर जाता है।
-महात्मा गांधी

मूल्य ₹ 3/-

जिद...सच की

www.4pm.co.in | www.facebook.com/4pmnewsnetwork | @Editor_SanjayS | YouTube @4pm NEWS NETWORK

• वर्ष: 12 • अंक: 05 पृष्ठ: 8 • लखनऊ, शुक्रवार 6 फरवरी, 2026

आरसीबी ने दूसरी बार जीता डब्ल्यूपीएल... 7 | यूपी में जमीनों पर जारी है खेल... 3 | भाजपाइयों को पीठासीन अधिकारी... 2

रास में पीएम के भाषण पर सियासी घमासान

कांग्रेस ने भाजपा पर साधा निशाना

संसद के अंदर से लेकर बाहर तक कोहराम

» भारी नारेबाजी और विरोध प्रदर्शन के बीच लोस स्थगित

» 9 फरवरी को सुबह 11:00 बजे फिर से शुरू होगी कार्रवाई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। संसद में हंगामा जारी है। नेताओं को जनता से जैसे कुछ लेना देना ही नहीं है। विपक्ष तो विपक्ष है उसका काम तो सरकार से सवाल करना ही है पर सत्ता पक्ष जिसकी जिम्मेदारी है कि सबको साथ लेकर सदन को चलाया जाए पर वह भी हंगामें में पीछे नहीं रह रही है। उधर कांग्रेस व भाजपा में किताब व गद्दार पर वार-पलटवार के बाद पीएम के भाषण पर भी रार मचना प्रारंभ हो गया।

कांग्रेस नेता और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने राज्यसभा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भाषण पर निशाना साधते हुए कहा कि जो उचित समझो वही करो। विवादों के बीच विपक्ष ने सरकार के खिलाफ प्रदर्शन किया, जिससे सदन में तनाव और बढ़ गया। संसद का बजट सत्र जारी है। 4 फरवरी को लोकसभा में प्रधानमंत्री का भाषण रद्द किया गया। इसके बाद गुरुवार (05 फरवरी) शाम को पीएम मोदी ने राज्यसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा का जवाब दिया। प्रधानमंत्री मोदी राज्यसभा में करीब 97 मिनट बोले। इस दौरान राज्यसभा में विपक्ष के सांसदों ने भाषण के समय वॉकआउट कर दिया। अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भाषण पर कांग्रेस अध्यक्ष और राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे की प्रतिक्रिया आई है।

प्रधानमंत्री की घोषणाएं उन्हें अच्छा इंसान होने से और दूर ले जाती हैं : जयराम

भाषण की और निंदा करते हुए रमेश ने कहा कि प्रधानमंत्री की घोषणाएं उन्हें अच्छा इंसान होने से और दूर ले जाती हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री का 97 मिनट का भाषण दयनीय से भी बदतर था और उन्हें अपनी ही नफरतों का कैदी बताया। कांग्रेस सांसद ने लिखा कि एक बात तो स्पष्ट है। वे खुद को महान व्यक्ति बताते रह सकते हैं। लेकिन जितना अधिक वे ऐसा कहेंगे, उतना ही यह स्पष्ट होता जाएगा कि वे अच्छे व्यक्ति नहीं हैं और कभी हो भी नहीं सकते। उनके 97 मिनट के भाषण को दयनीय कहना भी कम होगा। वे अपनी ही नफरतों के कैदी हैं। उन्होंने राज्यसभा में विपक्ष के प्रतिनिधि द्वारा उठाए गए किसी भी गंभीर प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।

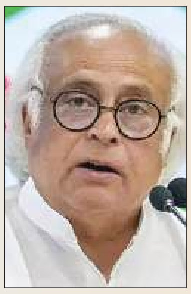

ऑपरेशन सिंदूर व चीन को क्लीन चिट पर चर्चा से भाग रहे

रमेश ने आगे प्रधानमंत्री पर ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत और पाकिस्तान के बीच युद्धविराम कराने के अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के दावे पर प्रतिक्रिया न देने का आरोप लगाया। जनरल एमएम नरवणे के अप्रकाशित संस्मरण के अनुसार, लोकसभा में विपक्ष के प्रतिनिधि राहुल गांधी द्वारा प्रधानमंत्री पर लगाए गए आरोपों को दोहराते हुए, रमेश ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री ने 19 जून, 2020 को चीन को क्लीन चिट भी दे दी थी। रमेश ने आरोप लगाया कि वाशिंगटन डीसी में उनके करीबी दोस्त 10 मई, 2025 को ऑपरेशन सिंदूर को रोकने के लिए हस्तक्षेप करने की बात को सौ साल से दोहरा रहे हैं। फिर भी प्रधानमंत्री इस मुद्दे पर पूरी तरह से चुप हैं - ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने 19 जून, 2020 को पूर्वी लद्दाख में बीस से अधिक जवानों के शहीद होने के बाद चीन को दी गई अपनी कुख्यात क्लीन चिट पर चुप्पी साधे रखी थी।

पीएम की चुप्पी पर पूछे गए तीखे सवाल

कांग्रेस सांसद जयराम रमेश ने शुक्रवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर तीखा हमला करते हुए दावा किया कि उन्होंने गुरुवार को राज्यसभा में बोलते हुए विपक्ष के नेता (एलओपी) द्वारा उठाए गए किसी भी गंभीर प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। एक्स पर एक पोस्ट में, रमेश ने प्रधानमंत्री के भाषण को असुरक्षाओं का विशाल पुलिंदा और झूठ का घुमक्कड़ बताया। रमेश ने पोस्ट में लिखा कि प्रधानमंत्री ने कल शाम राज्यसभा में एक बार फिर यह उजागर कर दिया कि वे कितने असुरक्षाओं के पुलिंदे हैं, कितने झूठ के घुमक्कड़ हैं, पूर्वाग्रहों का भंडार हैं और कितनी घृणा और जहर के स्रोत हैं।

97 मिनट के भाषण में कुछ नई बात नहीं : खरगे

न्यूज एजेंसी एएनआई से बात करते हुए खरगे ने पीएम मोदी को घेरा। अपने बयान में उन्होंने कहा, झूठी बातों को दोहराना (प्रधानमंत्री) उनका हमेशा एक काम रहा है। 97 मिनट के भाषण में प्रधानमंत्री ने कुछ नई बात नहीं कही और हमने जो राष्ट्रपति के अभिभाषण पर विचार रखे थे, उन्होंने उसपर एक भी जवाब नहीं दिया। वो सिर्फ 100 साल, 75 साल की बात करते रहे। हमें जनरल नरवणे (रिटायर्ड) की पब्लिश हुई किताब मिल गई, लेकिन उन्हें यह कैसे नहीं मिली? रक्षा मंत्री यह कैसे कह सकते हैं कि किताब प्रकाशित नहीं हुई है?

विपक्ष ने 'जो उचित समझो वही करो' के नारे लगाते हुए तख्तियां दिखाई

विपक्षी सांसदों ने संसद के मकर द्वार पर सरकार के खिलाफ प्रदर्शन किया और जो उचित समझो वही करो के नारे लगाते हुए तख्तियां दिखाई जिन पर धोखाधड़ी लिखा था। इस बीच, भारी नारेबाजी और विरोध प्रदर्शन के बीच लोकसभा को दिनभर के लिए स्थगित कर दिया गया और यह 9 फरवरी को सुबह 11:00 बजे फिर से शुरू होगी।

मोदी ने राहुल पर किया वार

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि कल जो हुआ - कांग्रेस के युवराज, जिनका शातिर दिमाग है, ने सदन के एक सदस्य को गद्दार कहा। उनका अहंकार चरम पर है। उन्होंने कांग्रेस छोड़ने वाले अन्य लोगों को गद्दार नहीं कहा, लेकिन इस सांसद को सिर्फ इसलिए गद्दार कहा क्योंकि वह सिख हैं। यह सिखों का अपमान है, गुरुओं का अपमान है।

संबंधित खबरें पेज 8 पर भी

भाजपाइयों को पीठासीन अधिकारी बना दे चुनाव आयोग: अखिलेश

सीईसी पर सपा प्रमुख का हमला- चुनाव आयोग ने भाजपा को ठेके पर अपना काम दे दिया है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव का भाजपा व चुनाव आयोग पर हमला जारी है। सपा प्रमुख ने कहा कि अब बस यही बचा है कि चुनाव आयोग भाजपाइयों के घर पर बूथ बना दे और भाजपाइयों को पीठासीन अधिकारी। क्या चुनाव आयोग ने भाजपा को ठेके पर अपना काम दे दिया है या भाजपा ने चुनाव आयोग को संविदा पर रख लिया है।

सरेआम वोट काटने बढ़ाने का अपराध जारी

भ्रष्ट-भाजपा शासनकाल में आश्चर्य ये नहीं है कि सरेआम वोट काटने-बढ़ाने का अपराध हो रहा है, आश्चर्य ये है कि संवैधानिक संस्थाओं को ये नज़र नहीं आ रहा है। आज वोट छीनने वाले कल को जनता का बाक़ी सब भी छीन लेंगे। बाक़ी सब में भाजपाई भी शामिल होंगे, कोई बचेगा नहीं। भाजपाई भी याद रखें, ठगों का रिश्ता, सिर्फ़ ठगी से होता है और किसी से नहीं। इस कहते हैं, अंधेर नगरी, चौपट आयोग।

सपा मुखिया ने कहा है कि अब तो उल्टा ये कहना पड़ेगा कि चुनाव आयोग का कोई झंडा हो तो वो भाजपाइयों के घर पर लगा दे। श्री यादव ने कहा कि प्रशासनिक पर्यायवाची कोश में 'चुनाव आयोग' को 'भाजपा' के पर्यायवाची के रूप में जोड़ देना चाहिए।

गन्ना किसानों से मिले पूर्व विधायक अरुण वर्मा

सुल्तानपुर सहकारी गन्ना संघ चीनी मिल में बिना बताये 250 किसानों की गन्ना ट्राली तौलने से मना कर दिया गया। इसकी जानकारी मिलते ही समाजवादी पार्टी के पूर्व विधायक अरुण वर्मा ने मौके पर पहुँचकर किसानो से मुलाक़ात की। और जीएम चीनी मिल से वार्ता कर तत्काल उनकी गन्ने की ट्राली तौले जाने के लिए कहा। श्री वर्मा ने कहा कि इस लड़ाई में समाजवादी पार्टी किसानो के साथ खड़ी है। इस बात की आशंका है की भाजपा सरकार कहीं यह चीनी मिल बन्द करके प्राइवेट कंपनियों को न बेच दे। इस मौके पर बृजेश यादव प्रदेश उपाध्यक्ष मुलायम सिंह यूथ ब्रिगेड सुलतानपुर, त्रिजोगी यादव पूर्व प्रधान, ज्ञान प्रकाश यादव सदस्य जिला पंचायत, जयंत यादव टोनी प्रदेश सचिव पिछड़ा प्रकोष्ठ, कोलाई पूर्व प्रधान, पंकज, लालजी, सुमित त्रिपाठी, गिरधारी वर्मा आदि लोग मौजूद रहे।

ब्राह्मणों के अपमान वाली फिल्म पर तुरंत लगे प्रतिबंध: मायावती

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने ब्राह्मणों के अपमान पर चिंता जताते हुए घूसखोर पंडत फिल्म पर प्रतिबंध लगाने की मांग की है। बसपा सुप्रीमो ने अपने बयान में कहा कि यह दुख व चिंता की बात है कि पिछले कुछ समय से अकेले यूपी में ही नहीं, बल्कि अब फिल्मों में भी पंडित को घुसपैठिया बताकर पूरे देश में इनका अपमान और अनादर किया जा रहा है। इससे समूचे ब्राह्मण समाज में जबरदस्त रोष व्याप्त है। बसपा इसकी कड़े शब्दों में निंदा करती है। ऐसी जातिसूचक फिल्म पर केंद्र सरकार को तुरंत प्रतिबंध लगाना चाहिए। इसके पहले, हजरतगंज कोतवाली में फिल्म घूसखोर पंडत के निर्देशक व उनकी टीम के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है।

» घूसखोर पंडत को लेकर बसपा ने की कड़ी निंदा

निर्देशक के खिलाफ जातिगत भावनाएं आहत करने व सांप्रदायिक सद्भाव को बिगाड़ने की कोशिश के उधर लखनऊ पुलिस कमिश्नरेट की ओर से जारी किए गए बयान में कहा गया है कि समाज में सौहार्द बिगाड़ने और धार्मिक व जातिगत भावनाओं को आहत करने के खिलाफ कार्रवाई सुनिश्चित की गई है। फिल्म का शीर्षक एक विशेष जाति (ब्राह्मण) को लक्षित कर अपमानित करने के उद्देश्य से रखा गया है जिसे लेकर समाज में भारी रोष एवं आक्रोश व्याप्त है। जारी किए गए बयान में कहा गया है कि ऐसा लगता है कि डायरेक्टर व उनकी टीम द्वारा समाज में वैमनस्यता फैलाने, शांति व्यवस्था भंग करने और सौहार्द बिगाड़ने के उद्देश्य से इस सामग्री को प्रकाशित किया गया है। किसी भी समुदाय की भावनाओं को आहत करने और शांति व्यवस्था के साथ खिलवाड़ करने वाले तत्वों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी।

तथ्यों को छिपा रही बिहार सरकार: राबड़ी देवी

» नीट अभ्यर्थी की मौत के मामले में राजद ने उठाए सवाल

» जदयू ने भी पूर्व सीएम पर किया पलटवार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार में विधानपरिषद की सदस्य और राष्ट्रीय जनता दल (राजद) की नेता राबड़ी देवी ने राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नीट) की एक अभ्यर्थी की मौत के मामले में पुलिस पर तथ्यों को ''छिपाने'' का आरोप लगाया। पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी बजट सत्र के तीसरे दिन विधानपरिषद के बाहर विपक्षी सदस्यों द्वारा किये जा रहे प्रदर्शन के दौरान पत्रकारों को संबोधित कर रही थीं।

जहानाबाद निवासी नीट अभ्यर्थी पिछले महीने छह जनवरी को पटना के चित्रगुप्त नगर स्थित एक छात्रावास में अचेत अवस्था में पाई गई थी। कई दिनों तक कोमा में रहने के बाद 11 जनवरी को एक निजी अस्पताल में उसकी मौत हो गई थी। परिजनों ने अधिकारियों पर मामले को दबाने की कोशिश करने का आरोप लगाया था। बिहार सरकार ने इस मामले की जांच केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) से कराने की सिफारिश की थी। विशेष जांच दल (एसआईटी) इस मामले की जांच कर रहा था। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, उन्होंने (सरकार ने) मामला सीबीआई को सौंप दिया लेकिन सीबीआई क्या करेगी? यह एजेंसी भी केंद्र सरकार के नियंत्रण में है। राबड़ी देवी ने विधानसभा में मंगलवार को पेश बजट पर कहा, इस बजट में बिहार के लोगों के लिए कुछ भी नहीं है। वे केवल लोगों को गुमराह कर उनके वोट हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं।

बिहार के हर जिले में बढ़े अपराध

राबड़ी देवी ने पत्रकारों से कहा, बिहार का कोई ऐसा जिला नहीं है, जहां अपराध नहीं हो रहे हैं। इस (नीट अभ्यर्थी मौत मामले) पर सरकार और गृह मंत्री चुप हैं। उन्होंने सभी तथ्यों को छिपाने के बाद मामले को सीबीआई को सौंप दिया। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार 'दोषियों को बचाने' की कोशिश कर रही है क्योंकि अपराध में शामिल लोग 'सरकार का हिस्सा' हैं।

जनता की समस्याएं जस की तस, सरकार प्रचार में व्यस्त: जूली

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। विधानसभा में राज्यपाल के अभिभाषण पर बहस के दौरान नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने सरकार और मुख्यमंत्री पर तीखा हमला बोला। जूली का भाषण आक्रमक, व्यंग्यात्मक और आरोपों से भरा रहा, जिसमें उन्होंने सरकार की नीतियों, कामकाज और दावों पर गंभीर सवाल खड़े किए।

उन्होंने महाभारत के शांति पर्व का उल्लेख करते हुए कहा कि भीष्म ने युधिष्ठिर को राजधर्म का उपदेश देते हुए स्पष्ट कहा था कि झूठ और असत्य के आधार पर न तो राज्य चलता है, न सुख मिलता है और न ही यश। जो राजा झूठ बोलता है, उसकी प्रजा अंततः उसे त्याग देती है। नेता प्रतिपक्ष ने सरकार के संकल्प पत्र पर सवाल उठाते हुए कहा कि मुख्यमंत्री और सरकार दावा कर रहे हैं कि संकल्प पत्र के 72 प्रतिशत वादे पूरे हो गए हैं, लेकिन सरकार यह नहीं बता पा रही कि कुल कितने वादे थे। जूली ने कहा कि संकल्प पत्र के 9 खंडों में कुल 122 वादे किए गए थे। यदि 72 प्रतिशत पूरे हो चुके हैं, तो शेष 28 प्रतिशत का क्या हुआ? उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार आंकड़ों और दावों के जरिए जनता को भ्रमित कर रही है।

पंचायत चुनाव में ओबीसी के लिए सीटें और पदों पर उचित आरक्षण हो: चंद्रशेखर आजाद

» सांसद ने सीएम योगी और राज्य चुनाव आयोग को लिखा पत्र

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव को लेकर हलचल तेज हो गई है। इस बीच आजाद समाज पार्टी (कांशीराम) के मुखिया और नगीना से सांसद चंद्रशेखर आजाद ने चुनाव में अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए सीटें और पदों पर उचित आरक्षण की व्यवस्था करने के मांग की है और चुनाव आयोग से आवश्यक कार्रवाई करने की मांग की है।

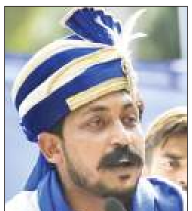

नगीना सांसद ने इस संबंध में सीएम योगी आदित्यनाथ, पंचायती राज मंत्री ओम प्रकाश राजभर और राज्य चुनाव आयोग को चिट्ठी लिखी है. उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में प्रस्तावित त्रिस्तरीय पंचायत चुनावों में अन्य पिछड़ा वर्ग के आरक्षण से जुड़ा एक अत्यंत महत्वपूर्ण, संवैधानिक एवं सामाजिक न्याय का प्रश्न खड़ा हो गया है। अगर ग्राम पंचायत एवं जिला पंचायतों में ओबीसी समाज को उसका प्रतिनिधित्व नहीं मिलता तो केवल एक वर्ग के अधिकारों का हनन नहीं होगा बल्कि, संविधान में निहित सामाजिक न्याय की भावना पर सीधा आघात होगा. संविधा के अनुच्छे 243डी(6) के अंतर्गत राज्य को ये अधिकार प्राप्त है कि वो पंचायतों में ओबीसी आरक्षण की व्यवस्था करे।

चंद्रशेखर ने कहा कि ओबीसी आरक्षण को लागू करना राज्य सरकार का दायित्व है. साल 2023 के नगर निकाय चुनाव में ओबीसी आरक्षण को लेकर यूपी सरकार की लापरवाही की वजह से हाईकोर्ट को चुनावी प्रक्रिया पर रोक लगानी पड़ी थी. जिसके बाद सरकार सुधारात्मक कदम उठाने पड़े थे।

उन्होंने इस बात पर चिंता जताई कि सरकार 2023 के अनुभव से सबक लेने के बजाय पंचायत चुनाव में ओबीसी आरक्षण को लेकर कोई स्पष्ट, समयबद्ध और पारदर्शी कार्रवाई नहीं की है. ये स्थिति प्रशासनिक असफलता को दर्शाती है और ओबीसी समाज के अधिकारों के प्रति सरकार की उदासीनता को भी उजागर करती है।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

पश्चिम बंगाल में अकेले विस चुनाव लड़ेगी कांग्रेस

» वाम मोर्चे के साथ गठबंधन नहीं करेगी पार्टी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पुष्टि की कि वह आगामी 2026 पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनावों में सभी 294 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ेगी और वाम मोर्चे के साथ गठबंधन नहीं करेगी। चुनावों पर कांग्रेस की बैठक के बाद बोलते हुए, पश्चिम बंगाल कांग्रेस प्रभारी गुलाम अहमद मीर ने कहा कि आज एक बैठक हुई और उसमें सभी उपस्थित थे।

विषय था पश्चिम बंगाल में आगामी चुनावों के बारे में पार्टी नेताओं के विचार, आगे की रणनीति। सभी नेताओं ने अपने विचार रखे। सभी के विचार सुने गए। नेतृत्व का मत था कि इस बार हम पश्चिम बंगाल में अकेले चुनाव लड़ेंगे।

मीर ने आगे जोर देते हुए कहा कि स्वतंत्र रूप से चुनाव लड़ने के फैसले को राष्ट्रीय नेतृत्व का समर्थन प्राप्त है, और कहा कि इस बार पश्चिम बंगाल में, हमारे कार्यकर्ता और कार्यकर्ता चाहते हैं कि हम राज्य की 294 सीटों पर अकेले चुनाव लड़ें। राष्ट्रीय नेतृत्व राज्य नेतृत्व द्वारा लिए गए निर्णय के साथ खड़ा है।

भाजपा चुनाव की तैयारियों को मजबूत करने में लगी

इसी बीच, भाजपा चुनाव की तैयारियों को मजबूत कर रही है। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन ने नई दिल्ली में केंद्रीय मंत्री सुकांत मजूमदार के आवास पर पश्चिम बंगाल के सांसदों के साथ एक रणनीतिक बैठक की, जिसमें संगठनात्मक मामलों और निर्वाचन क्षेत्र से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की गई। बैठक के बाद, भाजपा सांसद राजू बिस्टा ने कहा कि नितिन नबीन ने सांसदों को मार्गदर्शन दिया और उनकी समस्याओं पर चर्चा की। राजू बिस्टा ने पत्रकारों से कहा कि पश्चिम बंगाल के हमारे सभी सांसद, लोकसभा, राज्यसभा और नवनिर्वाचित सांसद भी। हमें राष्ट्रीय अध्यक्ष के साथ दो घंटे से अधिक समय बिताने और अपनी चिंताओं पर चर्चा करने का अवसर मिला। यह पूरी तरह से एक संगठनात्मक बैठक थी, और उनसे हमारी यह पहली मुलाकात थी, इसलिए हमें कई सुझाव और मार्गदर्शन प्राप्त हुए। यही कारण है कि मैं भारतीय जनता पार्टी को अन्य पार्टियों से अलग मानता हूं। हमने राष्ट्रीय अध्यक्ष से पारिवारिक माहौल में मुलाकात की, और सभी सांसदों ने अपनी-अपनी समस्याएं प्रस्तुत कीं।

यूपी में जमीनों पर जारी है खेल, सरकारी कर्मी व कब्जेधारियों में मेल

प्रशासन पर कार्रवाई न करने का आरोप

फर्जी पट्टों के जरिए प्लाटिंग और निर्माण का आरोप, जांच के आदेश जारी

» लेखपाल की मिलीभगत से ग्राम समाज की करोड़ों की जमीन पर कब्जे का आरोप

मो. शारिक/4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। राजधानी लखनऊ के सरोजनीनगर तहसील क्षेत्र से एक बड़ा और चौंकाने वाला मामला सामने आया है। यहां वार्ड इब्राहिमपुर प्रथम के ग्राम हरिहरपुर में ग्राम समाज की करोड़ों रुपये मूल्य की सरकारी जमीन पर कथित रूप से भूमाफियाओं द्वारा अवैध कब्जा कर प्लाटिंग और निर्माण किए जाने का आरोप लगा है।

इस मामले को लेकर भाजपा पार्षद बृजमोहन शर्मा ने नगर निगम लेखपाल अजीत तिवारी और अन्य राजस्व अधिकारियों पर गंभीर आरोप लगाए हैं। पार्षद के अनुसार खसरा संख्या 410, 411, 413, 425, 426, 427, 433, 632स, 867 और 870, जो राजस्व अभिलेखों में उसार के रूप में दर्ज ग्राम समाज की जमीन है, उसे फर्जी तरीके से पट्टों पर चढ़ाकर कब्जा कराया गया। वहीं पार्षद बृजमोहन शर्मा ने बताया कि उन्होंने इस पूरे मामले की शिकायत उपजिलाधिकारी, जिलाधिकारी, मंडलायुक्त, नगर आयुक्त और लखनऊ विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष से की, लेकिन कार्रवाई के नाम पर सिर्फ औपचारिकताएं हुईं। हालांकि पूर्व में रही मंडलायुक्त डॉ. रोशन जैकब ने पहले संज्ञान लिया था, लेकिन उसके बाद भी अवैध कब्जे और निर्माण नहीं रुके।

4पीएम में खबर आने के बाद हरकत में आया प्रशासन

बताया जा रहा है कि सरकारी बंजर जमीन पर कब्जे की खबर मीडिया में प्रमुखता से आने के बाद नगर आयुक्त ने संज्ञान लिया और जांच के आदेश जारी किए। अब देखना होगा कि जांच के बाद दोषियों पर क्या कार्रवाई होती है और ग्राम समाज की जमीन को कब्जा मुक्त कराया जा सकेगा या नहीं?

फर्जी पट्टों से भूमिधर दर्ज कर शुरू की प्लाटिंग

आरोप है कि तहसील के कथित भ्रष्ट अधिकारियों और ग्राम प्रधान की मिलीभगत से बाहरी लोगों के नाम फर्जी पट्टे कराए गए। इसके बाद 24 अक्टूबर 2024 को इन जमीनों को असंक्रमणीय भूमिधर से संक्रमणीय भूमिधर दर्ज कराकर अवैध रूप से प्लाटिंग शुरू कर दी गई। वर्तमान में इन जमीनों पर रो-हाउस, होटल और व्यावसायिक भवनों का निर्माण तेजी से कराया जा रहा है।

स्थानीय लोगों की शिकायतें भी अनसुनी

स्थानीय निवासी केशव मिश्रा ने भी आरोप लगाया कि उन्होंने कई बार प्रशासन से शिकायत की, लेकिन कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। परिणामस्वरूप ग्राम समाज की जमीन पर लगातार कब्जा और निर्माण जारी है। इस मामले में नगर आयुक्त गौरव कुमार ने बताया कि अपर नगर आयुक्त को जांच कर कार्रवाई के निर्देश दिए गए हैं। वहीं अपर नगर आयुक्त पंकज श्रीवास्तव ने बताया कि एलडीए के अधिकारी रवि नंदन को जांच के आदेश जारी कर दिए गए हैं और सरकारी जमीन को कब्जा मुक्त कराने तथा अवैध निर्माण के खिलाफ कार्रवाई की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।

एफआईआर के बावजूद नहीं हुई गिरफ्तारी

बताया जा रहा है कि इस मामले में गोसाईगंज थाने में एफआईआर दर्ज है, लेकिन अब तक न तो कोई गिरफ्तारी हुई और न ही अवैध निर्माण पर रोक लगाई गई है। इससे प्रशासन की कार्यशैली पर सवाल खड़े हो रहे हैं और मिलीभगत की आशंका भी जताई जा रही है।

दक्षिण से आया बयान, उत्तर में कोहराम

उत्तर भारतीयों पर टिप्पणी पर मचा बवाल

» तमिलनाडु के कृषि मंत्री के बिगड़े बोल

» भाजपा-जदयू व सपा ने उठाए सवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। एकबार फिर दक्षिण भारतीय नेताओं के बयान से उत्तर भारत में तूफान खड़ा। बता दें तमिलनाडु के कृषि मंत्री एमआरके पन्नीरसेलवम ने उत्तर भारतीयों को लेकर विवादित बयान दिया है। उनके बयान के बाद भाजपा से लकर उत्तर भारत के नेताओं ने उन पर ताबड़ तोड़ पलटवार कर दिया। मंत्री ने भाषा और रोजगार पर नई बहस छेड़ते हुए कहा कि उत्तर भारत में बेरोजगारी चरम पर है। तमिलनाडु के कृषि मंत्री एमआरके पन्नीरसेलवम का एक बयान इन दिनों चर्चा में है।

उन्होंने उत्तर भारत से आने वाले कामगारों और रोजगार को लेकर ऐसा बयान दिया है, जिस पर सियासी बहस तेज हो गई है मंत्री के बयान को लेकर सोशल मीडिया से लेकर राजनीति तक तीखी प्रतिक्रियाएं देखने को मिल रही हैं। एक सार्वजनिक कार्यक्रम में बोलते हुए कृषि मंत्री एमआरके पन्नीरसेलवम ने कहा कि उत्तर भारत के लोग दक्षिण भारत, खासकर तमिलनाडु में टेबल साफ करने, निर्माण मजदूरी करने और पानीपुरी बेचने जैसे काम करने आते हैं। उन्होंने कहा कि इसकी वजह यह है कि उनके राज्यों में रोजगार की कमी है और वहां के लोग केवल हिंदी भाषा तक ही सीमित रहते हैं। इस टिप्पणी ने विधानसभा चुनाव से पहले हिंदी थोपने और प्रवासी मजदूरों पर बहस को फिर से गरमा दिया है, जिससे भाजपा और अन्य विपक्षी दलों ने डीएमके की कड़ी आलोचना की है।

तमिलनाडु के गांवों के लड़कों की तारीफ की

एमआरके पन्नीरसेलवम ने यह भी कहा कि तमिलनाडु के गांवों के लड़कों को भी विदेशों में रोजगार मिल रहा है, क्योंकि वे भाषा और तकनीक दोनों में आगे हैं। मंत्री के इस बयान के बाद राजनीतिक हलकों में विवाद शुरू हो गया है। विपक्षी दलों ने इसे उत्तर भारतीयों का अपमान बताया है, जबकि कुछ लोग इसे भाषा और शिक्षा नीति पर बहस का मुद्दा मान रहे हैं।

हिंदी वाले पानी पुरी बेचते हैं

तमिलनाडु के डीएमके मंत्री एमआरके पन्नीरसेल्वम के इस बयान ने राजनीतिक तूफान खड़ा कर दिया है कि उत्तर भारतीय सिर्फ हिंदी जानने के कारण पानी पूरी बेचने जैसे काम करते हैं। तमिलनाडु विधानसभा चुनाव से पहले, डीएमके के एक मंत्री द्वारा यह कहने के बाद राजनीतिक विवाद खड़ा हो गया है कि उत्तर भारतीय प्रवासी राज्य में टेबल क्लीनर और पानी पूरी विक्रेता के रूप में काम करने आते हैं। विधानसभा चुनाव से कुछ सप्ताह पहले हिंदी थोपने के मुद्दे पर एक और विस्फोटक टकराव की स्थिति बन गई है।

उत्तर भारत के लोगों को कोसा

मंत्री ने आगे कहा कि उत्तर भारत में लोग हिंदी के अलावा कोई दूसरी भाषा नहीं सीखते, जिससे उन्हें रोजगार के ज्यादा अवसर नहीं मिल पाते। इसी कारण वे तमिलनाडु जैसे राज्यों में आकर मजदूरी करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि तमिलनाडु ने हमेशा दो भाषा नीति अपनाई है, जहां तमिल के साथ-साथ अंग्रेजी को भी महत्व दिया जाता है। एमआरके पन्नीरसेलवम के अनुसार, तमिलनाडु के युवा अंग्रेजी जानने की वजह से विदेशों में जाकर अच्छी नौकरी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि राज्य के कई युवा लंदन, अमेरिका जैसे देशों में काम कर रहे हैं और करोड़ों रुपये कमा रहे हैं। मंत्री ने इसके लिए पूर्व मुख्यमंत्री एम. करुणानिधि को श्रेय देते हुए कहा कि उन्होंने राज्य में कंप्यूटर शिक्षा और आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा दिया, जिससे आज यहां के युवा सफल हो रहे हैं।

भाजपा ने कांग्रेस की चुप्पी पर उठाया सवाल

इन टिप्पणियों को लापरवाह और खतरनाक बताते हुए, भाजपा ने इन्हें राज्य में प्रवासी श्रमिकों के खिलाफ हिंसा में वृद्धि से जोड़ा और कांग्रेस नेता राहुल गांधी सहित विपक्षी इंडिया ब्लॉक के नेताओं की चुप्पी पर सवाल उठाया। जैसे-जैसे विवाद बढ़ता गया, डीएमके के वरिष्ठ नेताओं ने पार्टी को इन टिप्पणियों से अलग करने की कोशिश की।

उत्तर भारत का अपमान : अवधेश

समाजवादी पार्टी के सांसद अवधेश प्रसाद ने इस बयान को घटिया बताया और कहा कि यह उत्तर भारत का अपमान है। उन्होंने बताया कि इस क्षेत्र ने देश के आधे से अधिक प्रधानमंत्रियों को जन्म दिया है। उन्होंने कहा, यह अपमान है। मैं इस बयान की निंदा करता हूं।

अपने बयानों से सुर्खियों में बने रहना चाहते हैं कुछ नेता : चिराग

केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने कहा, कुछ नेता ऐसे हैं जो अपने बयानों से सुर्खियों में बने रहना चाहते हैं और जिनकी राजनीति सिर्फ बांटों और शासन करो पर चलती है, बांटने का काम कभी जाति के नाम पर, धर्म के नाम पर, कभी भाषा के आधार पर तो कभी क्षेत्र के आधार पर ऐसे में एनडीए गठबंधन प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में सिर्फ एक सोच के साथ आगे बढ़ रहा है कि सबका साथ, सबका विकास, अब जिनती योजनाओं का, नीतियों का निर्माण होता है, उसका आधार सिर्फ देश की आबादी होती है।

इस बार तमिलनाडु में डीएमके का सफाया तय

बीजेपी के सांसद संजय जायसवाल ने कहा, जिस प्रकार की ओछी टिप्पणियां डीएमके के नेता करते हैं, वो उनकी मानसिकता को दिखाता है। हम सभी देशवासियों का सम्मान करते हैं। इस बार तमिलनाडु में डीएमके का सफाया तय है।

केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा, कांग्रेस तमिलनाडु में सरकार चला रही है। उत्तर भारतीयों को गाली सुनवा रहे हैं। इसका जवाब राहुल को देना चाहिए। क्या इस देश में विभेद पैदा करवा रहे हैं? कांग्रेस पार्टी पाकिस्तान और चीन की भाषा बोलने वाली पार्टी बनती जा रही है।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

जिद... सच की

महापुरूषों पर सियासत करना अनुचित प्रयोग

> ऐसा लगता है कि सत्ता पक्ष केवल सियासी प्रयोग करती रहती है। भाजपा के दावे विपरित व सरदार पटेल के मंशा के अनुसार क्या राज्यों को तरजीह देती है। क्योंकि समय-समय पर कु छ राज्य सरकारे जहां पर केंद्र में शासन कर रही पार्टी से अलग दल की सरकार है वहां पर भेदभाव की खबरे आती हैं। जो पटेल की एकीकरण के सपने को तोड़ती नजर आती है।

लोकसभा में बहस के दौरान भाजपा बार-बार प्रथम प्रधानंमंत्री पं नेहरू का नाम लेकर कांग्रेस को घेरती है। वहीं देश ने भारत के पहले गृहमंत्री व उपप्रधानमंत्री वल्लभ भाई पटेल को याद करती। वर्तमान देश की दोनों बड़ी पार्टियां कांग्रेस व भाजपा उनपर अपना अपना हक बताती रहती हैं। कांग्रेस के तो वो थे ही पर भाजपा उन पर दावा करती है। ऐसा लगता है कि सत्ता पक्ष केवल सियासी प्रयोग करती रहती है। भाजपा के दावे विपरित व सरदार पटेल के मंशा के अनुसार क्या राज्यों को तरजीह देती है। क्योंकि समय-समय पर कु छ राज्य सरकारे जहां पर केंद्र में शासन कर रही पार्टी से अलग दल की सरकार है वहां पर भेदभाव की खबरे आती हैं। जो पटेल की एकीकरण के सपने को तोड़ती नजर आती है। ऐसे दोनों सियासी दलों को चाहिए कि पटेल जी की सिर्फ बातें न हो बल्कि वों कार्यशैली में चरितार्थ हो । राष्ट्रीय एकता के प्रति सरदार पटेल की निष्ठा आजादी के इतने वर्षों बाद भी पूरी तरह प्रासंगिक है। एकता की मिसाल कहे जाने वाले सरदार वल्लभ भाई पटेल गुजरात के नाडियाद में एक किसान परिवार में 31 अक्तूबर 1875 को जन्मे थे, जिन्होंने सदैव देश की एकता को सर्वोपरि माना।

सरदार पटेल ने भारत को खण्ड-खण्ड करने की अंग्रेजों की साजिशों को नाकाम करते हुए बड़ी ही कुशलता से आजादी के बाद करीब 550 देशी रियासतों तथा रजवाड़ों का एकीकरण करते हुए अखण्ड भारत के निर्माण में सफलता हासिल की थी। राजनीतिक और कूटनीतिक क्षमता का परिचय देते हुए स्वतंत्र भारत को एकजुट करने का असाधारण कार्य बेहद कुशलता से सम्पन्न करने के लिए जाने जाते रहे सरदार पटेल का देहांत दिल का दौरा पड़ने के कारण 15 दिसम्बर 1950 को 75 वर्ष की आयु में हो गया था और इसी दिन को प्रतिवर्ष 'सरदार पटेल स्मृति दिवस' के रूप में मनाया जाता है। देश के पहले गृहमंत्री और पहले उप-प्रधानमंत्री रहे सरदार पटेल का भारत के राजनीतिक एकीकरण के लिए अविस्मरणीय योगदान रहा। सरदार पटेल ने लंदन से वकालत की पढ़ाई पूरी कर अहमदाबाद में प्रैक्टिस शुरू की थी। वे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विचारों से अत्यधिक प्रेरित हुए और इसीलिए उन्होंने गांधी जी के साथ भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में हिस्सा लिया। वे भाई-भतीजावाद की राजनीति के सख्त खिलाफ थे और ईमानदारी के ऐसे पर्याय थे कि उनके देहांत के बाद जब उनकी सम्पत्ति के बारे में जानकारियां जुटाई गई तो पता चला कि उनकी निजी सम्पत्ति के नाम पर उनके पास कुछ नहीं था। वह जो भी कार्य करते थे, पूरी ईमानदारी, समर्पण, निष्ठा और हिम्मत से साथ पूरा किया करते थे।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

पारिस्थितिकीय संतुलन न बिगाड़े सौर ऊर्जा मुहिम

पंकज चतुर्वेदी

राजस्थान के पश्चिमी अंचल में इन दिनों एक ऐसी गूंज सुनाई दे रही है, जो आधुनिक विकास के मॉडल पर गंभीर सवालिया निशान खड़े करती है। बीकानेर और जैसलमेर के रेतीले धोरों से उठा 'खेजड़ी और ओरण बचाओ आंदोलन' महज चंद पेड़ों को बचाने की कवायद नहीं है, बल्कि यह उस प्राचीन पारिस्थितिकी तंत्र को बचाने की अंतिम पुकार है, जिसने सदियों से थार के मरुस्थल को जीवंत बनाए रखा है। जिस 'हरित ऊर्जा' को हम वैश्विक जलवायु परिवर्तन के समाधान के रूप में देख रहे हैं, वही सौर परियोजनाएं आज राजस्थान के 'ओरण' और राज्य वृक्ष 'खेजड़ी' के लिए अस्तित्व का संकट बन गई हैं। मरुस्थल के पर्यावरण में 'ओरण' की महत्ता को वैज्ञानिक और सामाजिक, दोनों ही धरातलों पर समझना आवश्यक है।

ओरण वे सामुदायिक वन क्षेत्र हैं, जिन्हें लोक देवताओं के नाम पर समर्पित कर दशकों और सदियों से संरक्षित किया गया है। सरकारी दस्तावेजों में भले ही इन्हें 'वेस्टलैंड' यानी बंजर भूमि के रूप में वर्गीकृत किया गया हो, लेकिन पारिस्थितिकी विज्ञान के नजरिए से ये 'बायोडायवर्सिटी हॉटस्पॉट' हैं। राजस्थान में लगभग 25,000 ओरण हैं, जो करीब 6 लाख हेक्टेयर भूमि पर फैले हैं। ये क्षेत्र न केवल दुर्लभ वनस्पतियों के घर हैं, बल्कि लुप्तप्राय जीवों के लिए अंतिम शरणस्थली भी हैं। यहां की जैव-विविधता अन्य मरुस्थलीय क्षेत्रों की तुलना में कहीं अधिक समृद्ध है, जो पूरे क्षेत्र के सूक्ष्म-जलवायु को नियंत्रित करती है। थार मरुस्थल में मानसून का पैटर्न तेजी से बदल रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि ओरण और खेजड़ी का विनाश इसी गति से जारी रहा, तो धूल भरी आंधियों की तीव्रता उत्तर भारत के मैदानी इलाकों, यहां तक कि दिल्ली-एनसीआर तक, कई गुना बढ़ जाएगी। ओरण की घास और पेड़ों की कमी का सीधा अर्थ है—रेत का अनियंत्रित प्रसार। सुप्रीम कोर्ट ने कई बार स्पष्ट किया है कि ओरण को 'डीम्ड फॉरेस्ट' माना जाए, लेकिन राजस्व रिकॉर्ड में इन्हें आज भी 'बंजर' के रूप में दर्ज किया जाना एक बड़ी प्रशासनिक चूक है।

इसी चूक का फायदा उठाकर ऊर्जा कंपनियां इन जमीनों को कौड़ियों के दाम पर लीज पर ले रही हैं। आंकड़ों के अनुसार, पिछले कुछ वर्षों में सौर परियोजनाओं के विस्तार के कारण केवल पश्चिमी राजस्थान में 26 लाख से अधिक खेजड़ी के पेड़ काटे गए हैं। वैज्ञानिक शोध जैसे फोटोवोल्टिक हीट आइलैंड इफेक्ट संबंधी अध्ययन चेतावनी देते हैं कि सौर पैनलों का अत्यधिक जमाव स्थानीय तापमान को 3 से 4 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ा देता है। यह ऊष्मा मरुस्थल के नाजुक पारिस्थितिकी संतुलन को बिगाड़ रही है। इसके अतिरिक्त, 'लेक इफेक्ट' के कारण आकाश में उड़ते पक्षियों को ऊपर से ये नीले पैनल जलस्रोत का भ्रम देते हैं, जिससे टकराकर उनकी मृत्यु हो रही है। जल प्रबंधन के दृष्टिकोण से देखें तो थार मरुस्थल में पानी की एक-एक बूंद स्वर्ण के समान है। लेकिन एक विशाल सौर परियोजना को सुचारु रखने के लिए पैनलों की सफाई हेतु प्रति सप्ताह लाखों लीटर पानी की आवश्यकता होती है। यह पानी उसी भूजल स्रोत से खींचा जा रहा है, जो स्थानीय समुदायों और वन्यजीवों की जीवनरेखा है। जब ओरण की जमीन पर कंक्रीट के ढांचे और पैनल बिछ जाते हैं, तो वर्षा जल के संचयन की प्राकृतिक प्रक्रिया अवरुद्ध हो जाती है। जलवायु परिवर्तन के चलते जहां मरुस्थलीकरण को रोकना प्राथमिकता होनी चाहिए, वहां खेजड़ी जैसे पेड़ों को काटना आत्मघाती कदम है। खेजड़ी की जड़ें जमीन के 30 मीटर नीचे तक जाकर मिट्टी को थामे रखती हैं और धूल भरी आंधियों की गति को नियंत्रित करती हैं। यदि ये 'प्राकृतिक दीवारें' ढह गईं, तो मरुस्थल का विस्तार अरावली की सीमाओं को लांघकर उत्तर भारत के मैदानी इलाकों तक पहुंचने में देर नहीं लगाएगा। आवश्यकता इस बात की है कि सौर ऊर्जा का विकास 'विकेंद्रीकृत' हो-उपजाऊ ओरण और मारू वनों के बजाय छतों और बंजर पहाड़ों का उपयोग किया जाए। विकास का पैमाना केवल 'मेगावाट' न हो, बल्कि उस पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा भी हो जो सदियों से हमें ऑक्सीजन, चारा और आश्रय देता आया है। मरुभूमि के पर्यावरण, उसकी जैव-विविधता और अनोखी जलवायु को बचाने के लिए ओरण को बचाना अब केवल एक क्षेत्रीय मांग नहीं, बल्कि एक पर्यावरणीय आपातकाल बन चुका है।

समझना होगा कि बिना खेजड़ी और ओरण के, राजस्थान का मरुस्थल केवल एक तपता हुआ सौर-कांच का घर बनकर रह जाएगा, जहां जीवन के लिए कोई स्थान नहीं होगा। यह समय नीति-निर्माताओं के लिए आत्ममंथन का है कि क्या हम एक पारिस्थितिकी तंत्र को नष्ट करके प्राप्त की गई बिजली को वास्तव में 'हरित ऊर्जा' कह सकते हैं? मरुभूमि की जैव-विविधता और ओरण की पवित्रता को बचाना अब केवल एक क्षेत्रीय मुद्दा नहीं, बल्कि मानवता के भविष्य के लिए एक नैतिक उत्तरदायित्व है।

परिवार परवरिश में महिला की भूमिका अनमोल

डॉ. रितु सारस्वत

पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय ने एक ऐतिहासिक फैसले में मोटर दुर्घटना में मृतक गृहिणी के परिवार को दिए जाने वाले मुआवजे को 58.22 लाख से बढ़ाकर 1.18 करोड़ कर दिया है। न्यायमूर्ति सुदीप्ति शर्मा ने फैसला सुनाते हुए कहा कि गृहिणी का काम अमूल्य है और इसे कम करके नहीं आंका जा सकता। न्यायालय ने इस बात पर जोर दिया कि यदि गृहिणी द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं को खुले बाजार में आउटसोर्स किया जाता, तो उन्हें काफी अच्छा वेतन मिलता। ऐसा पहली बार नहीं हुआ कि न्यायालय को गृहिणी के श्रम के अवमूल्यन को लेकर कठोर टिप्पणी करनी पड़ी हो। 27 अप्रैल, 2009 को 'नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड बनाम नाबालिग दीपिका' के मामले में, मद्रास उच्च न्यायालय ने 2000 के यूनिसेफ के उद्धरण को दिया। यूनिसेफ ने कहा था कि 'अवैतनिक देखभाल कार्य मानवीय अनुभव का आधार है'।

देखभाल कार्य वह है जो एक महिला मां के रूप में करती है और निश्चित रूप से भारत में, मां की भूमिका की सामाजिक अवधारणा को देखते हुए, महिला स्वयं इस भूमिका को आर्थिक मूल्य देने वाली अंतिम व्यक्ति होगी। लेकिन जब हम किसी दुर्घटना में मां की मृत्यु के कारण बच्चे को हुए नुकसान का आकलन कर रहे होते हैं, तो हम देखभालकर्ता के कार्य को मौद्रिक मूल्य देना आवश्यक समझते हैं, क्योंकि अंततः, घर ही वह मूलभूत इकाई है जिस पर हमारा सभ्य समाज टिका हुआ है।' ठीक इसी तरह 2010 में 'अरुण कुमार अग्रवाल बनाम नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड', मामले में देश के सर्वोच्च न्यायालय ने टिप्पणी करते हुए कहा था 'पत्नी द्वारा घर के लिए दिया गया योगदान अमूल्य है और उसे धन के रूप में मापा नहीं जा सकता। पत्नी द्वारा अपने बच्चों और पति के प्रति सच्चे प्रेम और स्नेह के साथ घरेलू मामलों के प्रबंधन में जो निःशुल्क सेवाएं प्रदान की जाती हैं, उनकी तुलना अन्य व्यक्तियों द्वारा दी जाने वाली सेवाओं से नहीं की जा सकती।'

न्यायालय ने यह भी कहा 'पत्नी/माता द्वारा परिवार-अर्थात पति और बच्चों-को दी गई सेवाओं के एवज में किसी भी राशि का परिमाण निर्धारित करना संभव नहीं है। तथापि, आश्रितों को प्रतिकर प्रदान करने के उद्देश्य से, गृहिणी/माता की सेवाओं का कुछ आर्थिक आकलन किया जाना आवश्यक है। इस संदर्भ में 'सेवाएं' शब्द को व्यापक अर्थ दिया जाना चाहिए और इसका निर्माण इस बात को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए कि मृतका द्वारा एक माता के रूप में अपने बच्चों को तथा एक पत्नी के रूप में अपने पति को दी गयी व्यक्तिगत देखभाल और ध्यान अब उपलब्ध नहीं रहा। आश्रित, मृतका द्वारा प्रदान की गई निःशुल्क सेवाओं की हानि के बदले पर्याप्त प्रतिकर पाने के हकदार हैं। देय राशि इस आधार पर कम नहीं की जा सकती कि कोई निकट संबंधी, जैसे दादी, स्वेच्छा से परिवार को कुछ सेवाएं प्रदान करने के लिए आगे आ सकता/सकती है, जो पहले मृतका द्वारा दी जाती थीं।' न्यायालय के इस मामले में केम्प एंड केम्प द क्वांटम ऑफ डैमेजेज का उल्लेख किया गया था।

केम्प एंड केम्प द क्वांटम ऑफ डैमेजेज टॉर्ट लॉ (नुकसान की भरपाई का कानून) पर आधारित एक विधिक ग्रंथ है, जिसे विशेष रूप से मुआवजे की गणना के लिए मानक संदर्भ माना जाता है। इसमें प्रतिपादित किया गया है कि क्षतिपूर्ति का निर्धारण केवल आय की प्रत्यक्ष हानि तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि उस वास्तविक, व्यावहारिक तथा संभावित क्षति का भी समुचित आकलन किया जाना चाहिए, जो मृतक द्वारा प्रदान की जा रही सेवाओं के अभाव में उसके आश्रितों को सहन करनी पड़ती है। यदि मृतक एक गृहिणी थी, तो यह कहना कि वह परिवार के लिए कोई आर्थिक योगदान नहीं देती थी, न तो तर्कसंगत है और न ही न्यायसंगत, क्योंकि गृहिणी द्वारा प्रदान की जाने वाली घरेलू सेवाएं—जैसे भोजन तैयार करना, बच्चों का पालन-पोषण, घरेलू प्रबंधन, पारिवारिक सदस्यों की देखभाल तथा नैतिक और बौद्धिक मार्गदर्शन—स्वभावतः अत्यंत मूल्यवान होती हैं, भले ही उनके लिए कोई प्रत्यक्ष पारिश्रमिक प्राप्त न होता हो। ग्रंथ यह स्पष्ट करता है कि ऐसी सेवाओं का मूल्यांकन बाजार में उपलब्ध समकक्ष सेवाओं की लागत के आधार पर किया जाना चाहिए। कोई बाहरी व्यक्ति इन सेवाओं की भावनात्मक, नैतिक और निरंतर गुणवत्ता की पूर्ण भरपाई नहीं कर सकता। अतः न्यायालयों को गृहिणी की सेवाओं के मूल्यांकन में यथार्थवादी, व्यापक एवं न्यायोचित दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

वर्ष 1934 में, अमेरिकी अर्थशास्त्री मार्गरेट रीड ने एक अलग दृष्टिकोण सुझाते हुए तर्क दिया कि यदि गृहिणियों द्वारा किए जाने वाले अवैतनिक कार्यों के लिए किसी तीसरे व्यक्ति को भुगतान किया जा सकता है, तो ऐसे कार्यों को उत्पादन के हिस्से के रूप में गिना जाना चाहिए। दुनिया भर की अदालतें यह मानती हैं कि गृहिणियों के योगदान को नकारा जाता रहा है। इस संदर्भ में 'मेहमत बनाम पेरी (1977) 2 ऑल ईआर 529' में इंग्लैंड की अपीलीय अदालत की टिप्पणी गौरतलब है कि 'पत्नी द्वारा परिवार को दी जाने वाली सेवाएं केवल घरेलू कार्य तक सीमित नहीं हैं।' न्यायालय ने बच्चों के प्रति मातृत्व-देखभाल तथा पति के प्रति व्यक्तिगत ध्यान और संगति की हानि को स्वतंत्र क्षतिपूर्ति योग्य शीर्ष माना। यह निर्णय स्थापित करता है कि पत्नी/माता की निःशुल्क सेवाओं का वास्तविक आर्थिक मूल्य है और उसे साधारण घरेलू कर्मचारी की सेवाओं के समकक्ष नहीं आंका जा सकता।

वैलेंटाइन डे का हर दिन होता है प्यार को बढ़ावा देने वाला

14 फरवरी को वैलेंटाइन डे मनाया जा रहा है। हालांकि प्यार के सप्ताह की शुरुआत 7 फरवरी से होती है। 7 फरवरी से 14 फरवरी तक वैलेंटाइन सप्ताह मनाया जाता है, जिसका हर दिन प्यार को बढ़ावा देने वाला होता है। जिसे आप पसंद करते हैं, उसे गुलाब का फूल, टेडी और चॉकलेट देकर इम्प्रेस करते हैं तो वहीं प्रपोज और प्रॉमिस के साथ प्यार को जाहिर करने की कोशिश करते हैं। इन सभी चरणों से होते हुए प्यार परवान चढ़ता है। वैलेंटाइन वीक के लिए बाजार सज चुके हैं। फूलों की दुकानें गुलाब से गुलजार हैं। वैलेंटाइन सप्ताह का एक दिन खास गुलाब के नाम होता है।

वैलेंटाइन वीक

7 फरवरी से 14 फरवरी तक वैलेंटाइन वीक मनाया जाता है। वैलेंटाइन सप्ताह के पहले दिन यानी 7 फरवरी को रोज डे मनाया जाता है। इस दिन आप अपने पार्टनर, दोस्त या किसी खास को गुलाब का फूल देकर अपनी भावनाएं व्यक्त कर सकते हैं।

रोज डे का इतिहास

वैलेंटाइन सप्ताह में रोज डे मनाने की एक खास वजह है। मुगल बेगम नूरजहां को लाल गुलाब पसंद थे। जहांगीर नूरजहां को खुश करने के लिए रोजाना एक टन ताजे लाल गुलाब उनके महल भेजा करते थे। उनकी यह प्रेम कहानी काफी प्रसिद्ध हो गई। इसके अलावा एक कहानी महारानी विक्टोरिया के दौर की है। जब लोग अपनी भावनाएं जताने के लिए गुलाब का फूल एक दूसरे को देते थे। इसी परंपरा को जारी रखने के लिए वैलेंटाइन सप्ताह का एक दिन रोज डे के तौर पर मनाया जाता है।

गुलाब के हर रंग का होता है खास मतलब

लाल गुलाब

लाल रंग प्यार का, सुहाग का प्रतीक होता है। शादीशुदा महिलाएं पति की लंबी उम्र के लिए लाल रंग का जोड़ा, लाल रंग का सिंदूर और लाल चूड़ियां पहनती हैं। वहीं लाल रंग का गुलाब भी इसी तरह के प्यार को दर्शाता है। अगर आप अपने साथी को रोज डे पर गुलाब देना चाहते हैं तो लाल रंग सबसे उपयुक्त रहेगा। लाल रंग का फूल प्यार की गहराई को दर्शाएगा। वहीं अगर आप किसी से इजहार ए मुहब्बत करना चाहते हैं तो भी लाल रंग का फूल उन्हें तोहफे में दें।

गुलाबी गुलाब

पिंक गुलाब देखने में तो खूबसूरत लगता ही है, साथ ही इसके रंग का भी खास अर्थ होता है। पिंक गुलाब उन्हें दिया जा सकता है, जो आपके जीवन में खास हों। यह रंग प्यार व रिश्ते की गहराई का अहसास दिलाने या अहमियत को जाहिर करने का प्रतीक है। आप अपने बेस्ट फ्रेंड को पिंक गुलाब दे सकते हैं। धन्यवाद बोलना चाहते हैं तो भी पिंक रोज देकर अपना आभार व्यक्त करें।

भावनाओं के मुताबिक करें रंग का चयन

पीला गुलाब

रोज डे पर पीले रंग का गुलाब भी दिया जा सकता है। पीला फूल दोस्ती का प्रतीक होता है। अगर आप किसी से दोस्ती करना चाहते हैं तो इस दिन का इंतजार करें। पीला गुलाब देकर उनसे दोस्ती करना चाहते हैं ये जाहिर कर दें। अगर साथी आपके गुलाब को मंजूर कर लेता है तो समझिए उसने आपकी दोस्ती को स्वीकार कर लिया यहां से दोस्ती की नई शुरुआत होती है। पीला गुलाब किसी रिश्ते की शुरुआत का भी प्रतीक है। दरअसल कोई भी रिश्ता मजबूत तब होता है, जब उसमें मैत्रीपूर्ण भावनाएं शामिल हों।

नारंगी गुलाब

नारंगी गुलाब आकर्षण का प्रतीक है। अगर आप किसी को पसंद करते हैं और उनके साथ अपने रिश्ते को दोस्ती से एक कदम आगे बढ़ाना चाहते हैं तो नारंगी रंग का गुलाब दें। इस रंग का गुलाब देकर आप सामने वाले को बता सकते हैं कि आप उन्हें पसंद करते हैं। उन्हें समझना चाहते हैं और आप दोनों के रिश्ते को अधिक वक्त देना चाहते हैं। किसी को इज्जत देने के लिए भी नारंगी गुलाब दिया जा सकता है।

हंसना मना है

एक पढ़ा-लिखा लड़का एक अनपढ़ लड़की से शादी कर लेता है दोनों एक पार्टी में जाते हैं। लड़का कहता है यदि कोई तुमसे पूछे कि यह तुम्हारे क्या लगते हैं। तो तुम कहना कि यह मेरे हस्बैंड है और मैं उनकी वाइफ हूं, उसी समय एक आदमी आता है। उस लड़की से पूछता है कि यह आपके क्या लगते हैं। लड़की कहती है कि यह मेरे हैंडपंप हैं और मैं इनकी पाइप हूं?

गर्ल- क्या कर रहे हो? बॉय- मक्खियां मार रहा हूं, गर्ल- कितनी मारी? बॉय- 3 मेल और 2 फीमेल, गर्ल- कैसे मालुम? बॉय- क्योंकि, 3 दारू की बोतल से चिपकी थी और 2 फोन से।

पति रोज किचन में जाता और चीनी का डिब्बा खोलकर देखता और फिर बंद करके रख देता, एक दिन पत्नी बोली- रोज रोज ये क्या करते रहते हो? पति- चुप कर, डॉक्टर ने कहा है, रोज अपनी शुगर चेक करते रहो।

कहानी: नटखट परी और जादुई गुफा

एक समय की बात है एक बहुत ही नटखट परी थी। वह पूरी दुनिया देखना चाहती थी। यह सोचकर वह अपने सभी लोगों से अलग हो गई। वह हर दिन बहुत दूर-दूर तक जाती और नए लोग व नई दुनिया देखती थी। एक दिन वह उड़ती हुई एक घर के पास पहुंची। वहां पर वह खिड़की के पास छिप गई। उसने देख उस घर में एक लड़का अपनी मां से जिद्द कर रहा था कि उसे परी देखना है। उसकी मां उसे समझा रही थी कि परियां सिर्फ आसमान में रहती हैं। जब आसामान पूरी तरह से साफ हो जाए, तब तुम उन्हें देख सकते है। अभी रात हो गई है सो जाओ और सुबह जब आसमान साफ होगा तो परी को देख लेना। मां की बात सुनकर वह लड़का सोने लगता है, लेकिन इसे नींद नहीं आती है। तभी खिड़की पर उसे नटखट परी दिखाई देती है। वह उस घर के अंदर लेकर आता है। उसने देखा वह नटखट परी बहुत ही छोटी है। दोनों साथ में खेलने लगते हैं। नटखट परी उसे अपना जादू दिखा रही थी और वह लड़का भी खुश होकर नाचता। तभी लड़के के कमरे इस तरह की शोर सुनकर वहां पर उसकी मां आने लगती है। लड़का नटखट परी से कहता है कि आप तुम्हें यहां से जाना होगा। मेरी मां आ रही हैं। लड़के की बात सुनकर नटखट परी वहां से उड़ जाती है और लड़का चुपचाप लेटकर सोने का नाटक करने लगता है। जब मां ने दरवाजा खोला तो देखा उसका बेटा तो सो रहा है। उसने सोचा उसे कोई भ्रम हुआ होगा और वह भी अपने कमरे में सोने चली गई।

कहानी से सीख- हर किसी में एक नटखट और शरारती पन छिपा होता है। फिर चाहे कोई बच्चा हो या कोई बड़ा आदमी।

7 अंतर खोजें

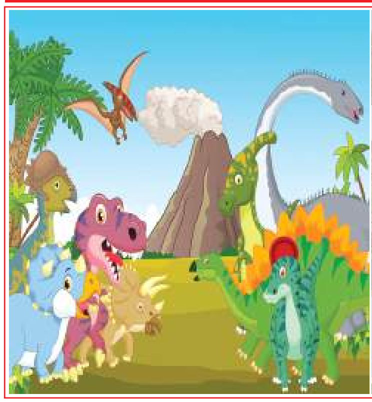

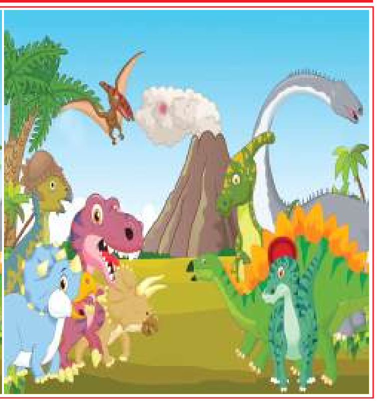

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष: पार्टी व पिकनिक का आनंद मिलेगा। रचनात्मक कार्य सफल रहेंगे। व्यवसाय ठीक चलेगा। प्रसन्नता रहेगी। जीवनसाथी के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। पारिवारिक उन्नति होगी।

वृषभ: शत्रु सक्रिय रहेंगे। स्वास्थ्य कमजोर होगा। भूमि व भवन संबंधी योजना बनेगी। बेरोजगारी दूर होगी। लाभ होगा। मान-प्रतिष्ठा में कमी आएगी। आर्थिक तंगी रहेगी।

मिथुन: पुराना रोग उभर सकता है। शोक समाचार मिल सकता है। भागदौड़ रहेगी। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। अधूरे कामों में गति आएगी। व्यावसायिक गोपनीयता भंग न करें।

कर्क: यात्रा सफल रहेगी। प्रयास सफल रहेंगे। वाणी पर नियंत्रण रखें। घर-बाहर पूछ-परख रहेगी। लाभ होगा। व्यापार-व्यवसाय में उन्नति के योग हैं। गीत-संगीत में रुचि बढ़ेगी।

सिंह: पुराने मित्र व संबंधियों से मुलाकात होगी। शुभ समाचार प्राप्त होंगे। व्यवसाय ठीक चलेगा। मान बढ़ेगा। स्वजनों से मेल-मिलाप होगा। जीवनसाथी से मदद मिलेगी।

कन्या: रोजगार मिलेगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। नौकरी में अधिकार बढ़ेंगे। व्यावसायिक समस्या का हल निकलेगा।

तुला: ऐश्वर्य पर व्यय होगा। स्वास्?य कमजोर रहेगा। विवाद को बढ़ावा न दें। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। राजकीय कार्य में परिवर्तन के योग बनेंगे।

वृश्चिक: लेन-देन में सावधानी रखें। बकाया वसूली के प्रयास सफल रखें। व्यावसायिक यात्रा मनोनुकूल रहेगी। कानूनी मामले सुधरेंगे। धन का प्रबंध करने में कठिनाई आ सकती है।

धनु: राजमान प्राप्त होगा। नए अनुबंध होंगे। नई योजना बनेगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। प्रसन्नता रहेगी। कार्य में व्यय की अधिकता रहेगी। आहार की अनियमितता से बचें।

मकर: पूजा-पाठ में मन लगेगा। कोर्ट व कचहरी के काम निबटेंगे। लाभ के अवसर मिलेंगे। प्रसन्नता रहेगी। कुछ मानसिक अंतर्द्वंद्व पैदा होंगे। व्यापार, नौकरी में उन्नति होगी।

कुम्भ: पुराना रोग उभर सकता है। चोट व दुर्घटना से बचें। वस्तुएं संभालकर रखें। बाकी सामान्य रहेगा। व्यापार-व्यवसाय सामान्य रहेगा। धैर्य एवं संयम रखकर काम करना होगा।

मीन: बेचैनी रहेगी। वैवाहिक प्रस्ताव मिल सकता है। कोर्ट व कचहरी में अनुकूलता रहेगी। धनार्जन होगा। संतान के स्वास्थ्य पर ध्यान दें। आलस्य का परित्याग करें।

गुड्डू पंडित के भौकाल को बड़े पर्दे पर दिखाने को तैयार है 'मिर्जापुर'

प्राइम वीडियो की लोकप्रिय वेब सीरीज 'मिर्जापुर' अब एक फिल्म के रूप में बड़े पर्दे पर आने वाली है। मेकर्स ने आज 'मिर्जापुर-द मूवी' की रिलीज डेट भी घोषित कर दी है। इसके बाद फैंस कालीन भइया और गुड्डू पंडित के भौकाल को बड़े पर्दे पर देखने के लिए खासा उत्साहित हैं।

'मिर्जापुर: द मूवी' को फरहान अख्तर और रितेश सिधवानी ने एक्सेल एंटरटेनमेंट के बैनर तले प्रोड्यूस किया है। आज मेकर्स ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर कर फिल्म की रिलीज डेट के बारे में जानकारी दी। मेकर्स ने जो पोस्टर शेयर किया है उसमें रेत पर कई गाड़ियां दौड़ रही हैं और पीछे एक बड़ी सी कुर्सी एक कार में बंधी है। इसके साथ ही मेकर्स ने रिलीज डेट घोषित करते हुए कैप्शन में लिखा, 'अब देखिए भौकाल बड़े पर्दे पर। 'मिर्जापुर- द मूवी' 4 सितंबर 2026 को आपके नजदीकी सिनेमाघरों में रिलीज हो रही है।'

'मिर्जापुर' की शुरुआत साल 2018 में एक वेब सीरीज के तौर पर हुई थी।

इस क्राइम-थ्रिलर के पहले सीजन को काफी पसंद किया गया था। फिल्म के एक-एक सीन से लेकर इसके डायलॉग तक काफी मशहूर हुए थे। देखते-देखते सीरीज के प्रमुख किरदार कालीन भइया (पंकज त्रिपाठी), गुड्डू पंडित (अली फजल) और मुन्ना भइया (दिव्येंदु शर्मा) घर-घर में काफी मशहूर हो गए। सीरीज की लोकप्रियता को भुनाते हुए मेकर्स साल 2020 में 'मिर्जापुर' का दूसरा सीजन लेकर आए। इस सीजन को भी पसंद किया गया और कहानी में कई नए मोड़ जोड़े गए। इसके लगभग चार साल बाद साल 2024 में मेकर्स 'मिर्जापुर' का तीसरा सीजन लेकर आए। हालांकि, इस बार कहानी दर्शकों को उतना प्रभावित नहीं कर पाई और सीरीज कोई खास चर्चा नहीं बटोर सकी। लेकिन अब मेकर्स मिर्जापुर की कहानी को बड़े पर्दे पर ला रहे हैं। ऐसे में दर्शकों का उत्साह इसे देखने के लिए चरम पर है। गुरमीत सिंह द्वारा निर्देशित 'मिर्जापुर: द मूवी' की कहानी पुनीत कृष्णा ने लिखी है। फिल्म में फ्रैंचाइजी के प्रमुख लोकप्रिय किरदारों की वापसी हुई है।

बॉलीवुड | मन की बात

जो मेरे करीब हैं उन्हें समझाने की जरूरत नहीं : एआर रहमान

फिल्म इंडस्ट्री में सांप्रदायिकता पर दिए एक बयान ने धीरे-धीरे एक बड़े विवाद का रूप ले लिया था। ऑस्कर विजेता एआर रहमान ने बीते कई साल से इंडस्ट्री में धर्म की वजह से आ रही दिक्कतों का जिक्र किया था। बाद में एक विडियो जारी कर अपने इस बयान के लिए सफाई पेश की थी जिसमें उन्होंने भारतीय होने पर गर्व जताया था। अब रहमान ने इस मामले पर लोगों से मिली प्रतिक्रिया पर भी बात की है। संगीतकार ए आर रेहमान के धर्म को लेकर भेदभाव के बयान पर फिल्मी दुनिया के कई सारे सितारों ने अपने रिएक्शन दिए थे। हाल ही में एक पोडकास्ट में रहमान ने अपने स्टेटमेंट और उसके बाद फिर दी गई सफाई के बारे में चर्चा कि। शो पर इस मुद्दे पर बात करने से कतराते हुए रहमान ने ज्यादा कुछ तो नहीं कहा। मगर फिर भी बातचीत को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कहा बेहतर है कि हम किसी और विषय पर बात करें, क्योंकि जो लोग हमें जानते हैं उन्हें सफाई देने की जरुरत नहीं होती। इसके अलावा जो लोग आपको नहीं जानते उन्हें आप कितनी भी सफाई दें वो नहीं सुनेंगे। एआर रहमान ने बीबीसी एशियन नेटवर्क से बातचीत में कहा था, 'आजकल फिल्म इंडस्ट्री में लोग रचनात्मक नहीं हैं, वो सही ढंग से फैसला नहीं ले सकते। मुझे कम काम मिलना एक सांप्रदायिक मुद्दा भी हो सकता है, लोग मेरे पीछे बातें करते हैं । मुझे कानाफूसी की तरह पता चला कि उन्होंने आपको बुक किया था, लेकिन संगीत कंपनी ने आगे बढ़कर अपने पांच संगीतकारों को काम पर रख लिया। मैंने कहा, वाह, बढ़िया है, अब मुझे आराम करने का समय मिल गया है, मैं अपने परिवार के साथ सुकून से समय बिता सकता हूं।' इसके अलावा रहमान ने 'छावा' को विभाजनकारी फिल्म भी बताया था।

न्यौता रद्द होने पर भड़के नसीरुद्दीन शाह, कहा सरकार की तारीफ न करना देशद्रोह हो गया

नसीरुद्दीन शाह अपने अभिनय के अलावा अपने बेबाक अंदाज को लेकर भी अक्सर चर्चाओं में रहते हैं। अब एक बार फिर अभिनेता ने अपने साथ हुए एक घटनाक्रम का जिक्र करते हुए गंभीर सवाल खड़ा किया है। दरअसल, अभिनेता को मुंबई यूनिवर्सिटी के एक कार्यक्रम में शामिल होना था। लेकिन कार्यक्रम से एक रात पहले गेस्ट लिस्ट से उनका नाम बाहर कर दिया गया। इसी को लेकर अब नसीरुद्दीन शाह ने नाराजगी जताते हुए आयोजकों पर सवाल उठाया है।

नसीरुद्दीन शाह ने इस पूरे मामले को लेकर एक इंडियन एक्सप्रेस अखबार में अपने विचार साझा किए हैं। इस लेख में अभिनेता ने बताया कि वो मुंबई यूनिवर्सिटी में होने वाले इस कार्यक्रम में जाने के लिए काफी उत्साहित थे, क्योंकि उन्हें स्टूडेंट्स से बात करने का मौका मिलने वाला था। ये कार्यक्रम मुंबई यूनिवर्सिटी के उर्दू डिपार्टमेंट ने 1 फरवरी को आयोजित किया था। 31 जनवरी की रात उन्हें बताया गया कि अब उन्हें कार्यक्रम में आने की जरूरत

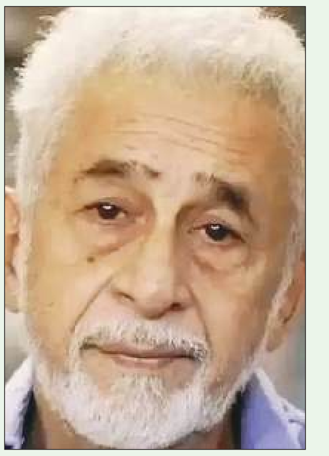

नहीं है। न तो कोई वजह बताई और न ही माफी मांगी गई। एक्टर ने आरोप लगाया कि बाद में यूनिवर्सिटी ने वहां मौजूद लोगों से कहा कि उन्होंने (नसीरुद्दीन शाह) खुद आने से मना कर दिया था। हालांकि, अभिनेता ने ऐसा नहीं किया था। उन्होंने कहा कि शायद यूनिवर्सिटी के पास सच बोलने की हिम्मत नहीं थी।

अभिनेता ने आगे बताया कि एक वरिष्ठ अधिकारी ने यूनिवर्सिटी को बताया कि वो देश के खिलाफ बयान देते हैं। इस वजह से उन्हें यूनिवर्सिटी में आने को मना कर दिया गया। इस पर एक्टर ने कहा कि अगर वह अधिकारी सच में ऐसा मानते हैं, तो मैं उन्हें चुनौती देता हूं कि वे मेरा एक भी बयान ऐसा दिखाएं जिसमें मैंने अपने देश को बुरा कहा हो। मैं सरकार के कई फैसलों की आलोचना करता हूं और आगे भी करता रहूंगा। मैं उन मुद्दों पर भी आवाज उठाता रहा हूं, जो मुझे और मुझ जैसे लोगों को परेशान करते हैं। नसीरुद्दीन ने कई ऐसे मामलों का भी जिक्र किया, जिन पर वो सवाल उठाते रहते हैं। जहां छात्र कार्यकर्ताओं को साल तक बिना मुकदमे के जेल में रखा जाता है। जहां बलात्कार और हत्या के दोषियों को आसानी से जमानत मिल जाती है। जहां गाय के नाम पर हिंसा करने वालों को खुली छूट मिलती है। जहां इतिहास को बदला जा रहा है और किताबों के सिलेबस बदले जा रहे हैं। जहां विज्ञान तक से छेड़छाड़ की जा रही है। अंत में सवाल उठाते हुए अभिनेता ने पूछा, यह नफरत आखिर कब तक चलेगी? यह वह देश नहीं है जिसमें मैं बड़ा हुआ और जिसे मुझे प्यार करना सिखाया गया था। अब हर जगह निगरानी, सोच पर पहरा और नफरत का माहौल है।

क्राइम सीन पर पीला टेप ही क्यों लगाती है पुलिस? वजह जान रह जाएंगे हैरान!

रील लाइफ हो या रियल लाइफ, आपने अक्सर देखा होगा कि जब पुलिस किसी अपराध स्थल पर पहुंचती है, तो सबसे पहले आम लोगों को दूर रखने के लिए उस इलाके को पीले टेप से घेर दिया जाता है। यानी क्राइम सीन को पीले रंग के टेप से सील किया जाता है। ऐसे में सवाल उठता है कि पुलिस इसके लिए पीले रंग का ही इस्तेमाल क्यों करती है, लाल या नीले रंग का और रंग क्यों नहीं? इसके पीछे एक खास वजह छिपी हुई है। आइए तो जानते है, क्या है वह वजह। दरअसल, पीला रंग आंखों को सबसे जल्दी दिखाई देने वाला और तुरंत ध्यान खींचने वाला रंग माना जाता है। साथ ही यह रंग चेतावनी और सावधानी का संकेत भी देता है, इसलिए इसका इस्तेमाल कई सार्वजनिक जगहों पर किया जाता है। आपने रेलवे स्टेशनों पर लगे बोर्ड और चेतावनी संकेत भी अक्सर पीले रंग में देखे होंगे, ताकि लोग उन्हें दूर से ही पहचान सकें। इसी वजह से पुलिस क्राइम सीन पर पीला टेप लगाती है, जिससे लोगों को साफ संदेश मिल जाए कि यह प्रतिबंधित क्षेत्र है और यहां प्रवेश करना मना है। पीली पट्टी लगाने के पीछे मनोवैज्ञानिक वजह भी मानी जाती हैं। पीला टेप लोगों के मन में अपने आप एक मानसिक रुकावट पैदा करता है। साफ-साफ शब्दों में कहें तो जैसे ही लोग इस पट्टी को देखते हैं, उनके दिमाग में यह साफ संदेश पहुंच जाता है कि यह एक संवेदनशील और प्रतिबंधित क्षेत्र है। वहां जाना न सिर्फ गलत हो सकता है, बल्कि कानूनी कार्रवाई में बाधा भी डाल सकता है। इस तरह पीला रंग न केवल चेतावनी का प्रतीक है, बल्कि एक ऐसा मनोवैज्ञानिक बैरियर भी बन जाता है, जो बिना कुछ कहे ही लोगों को रुकने पर मजबूर कर देता है।

अजब-गजब | ये है दुनिया की सबसे रहस्यमयी घटना

टेकऑफ के कुछ देर बाद गायब हो गया था प्लेन, 35 साल बाद हुई लैंडिंग

दुनिया में अब तक कई ऐसी रहस्यमयी घटनाएं सामने आई हैं, जिनके बारे में सुनकर किसी का भी दिमाग घूम जाए। आज हम आपको एक ऐसी ही खौफनाक और रहस्य से भरी फ्लाइट की कहानी बता रहे हैं, जिसकी लैंडिंग टेकऑफ के पूरे 35 साल बाद हुई थी। इस रहस्यमयी विमान का नाम बताया जाता है सेंटियागो फ्लाइट 513। कहा जाता है कि जब इस फ्लाइट की लैंडिंग के बाद उसके दरवाज़े खोले गए, तो अंदर का नज़ारा देखकर हर कोई सन्न रह गया-हर सीट पर सिर्फ कंकाल बैठे हुए थे।

रिपोर्ट्स के मुताबिक, सेंटियागो एयरलाइंस की यह फ्लाइट 14 सितंबर 1954 को पश्चिम जर्मनी के आचेन शहर से ब्राजील के पोर्टो एलेग्रे के लिए रवाना हुई थी। विमान को करीब 18 घंटे में अपनी मंजिल तक पहुंचना था। लेकिन अटलांटिक महासागर के ऊपर पहुंचते ही यह फ्लाइट अचानक रडार से गायब हो गई। इसके बाद कई दिनों तक बड़े स्तर पर खोज अभियान चलाया गया, लेकिन न तो विमान का मलबा मिला और न ही किसी यात्री का कोई सुराग। आखिरकार अधिकारियों ने इस विमान को लापता घोषित कर जांच बंद कर दी।

इसके बाद कहानी में आता है सबसे डरावना मोड़। बताया जाता है कि 12 अक्टूबर 1989 को ब्राजील के पोर्टो एलेग्रे एयरपोर्ट पर अचानक एक पुराना विमान आसमान से उतरता हुआ दिखाई दिया। एयर ट्रैफिक सर्विस ने विमान से संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। इसके बावजूद विमान ने सुरक्षित लैंडिंग कर ली। इस दृश्य को देखकर एयरपोर्ट पर मौजूद लोग ही नहीं, बल्कि बाद में पूरी दुनिया हैरान रह गई। जब विमान के दरवाज़े खोले गए, तो अंदर का मंजर किसी हॉरर फिल्म से कम नहीं था। हर सीट पर कंकाल बैठे हुए थे। यहां तक कि पायलट भी अपने कॉकपिट में उसी हालत में मिला, जैसे वह अब भी विमान उड़ा रहा हो। यह दृश्य देखकर लोगों की रूह कांप उठी।

इस घटना के बाद सबसे बड़ा सवाल यही उठा क्या यह फ्लाइट टाइम ट्रैवल करके आई थी? 35 साल तक गायब रहना और फिर अचानक उसी एयरपोर्ट पर लैंड कर जाना आज भी एक अनसुलझा रहस्य बना हुआ है। कुछ लोग इस कहानी को पूरी तरह मनगढ़ंत बताते हैं, तो वहीं कुछ का मानना है कि इसमें कोई ऐसा राज छिपा है, जिसे आज तक दुनिया समझ नहीं पाई। सेंटियागो फ्लाइट 513 की कहानी आज भी दुनिया की सबसे डरावनी और रहस्यमयी कहानियों में गिनी जाती है।

डीटीसी कर्मचारी कल्याण कोष में गबन पर मचा बवाल

» प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष बोले- निष्पक्ष जांच हो

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने डीटीसी कर्मचारी कल्याण कोष में 22 लाख रुपये से अधिक के गबन का आरोप लगाया है। उन्होंने इस मामले की तुरंत निष्पक्ष जांच की मांग की है। यादव का कहना है कि यह गबन डीटीसी के सोशल वेलफेयर विभाग से जुड़े कर्मचारियों ने किया है। उन्होंने कहा कि यह मामला कर्मचारियों के हक और भरोसे से जुड़ा है। इसलिए इसमें किसी भी तरह की ढिलाई नहीं होनी चाहिए।यादव ने मांग की कि उपराज्यपाल वीके सक्सेना और मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता स्वयं इस प्रकरण में हस्तक्षेप करें।

दोषी कर्मचारियों और अधिकारियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की जाए। साथ ही आपराधिक और विभागीय कार्रवाई भी की जाए। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि यदि जरूरत पड़े तो इस पूरे मामले की जांच सीबीआई से कराई जानी चाहिए। इससे सच्चाई सामने आएगी और दोषियों को सजा मिलेगी। उन्होंने कहा कि डीटीसी पहले से ही करीब 97 हजार करोड़ रुपये के घाटे में है। ऐसे में कर्मचारियों के कल्याण कोष में गबन होना बेहद गंभीर है। इससे कर्मचारियों का मनोबल टूटता है। ऐसे हालात में वे जनता की सेवा कैसे ठीक से कर पाएंगे। वहीं एमसीडी के सदन में बजट पर चर्चा के दौरान सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच जमकर छींटाकशी, आरोप-प्रत्यारोप और नोकझोंक देखने को मिली। बैठक में 28 पार्षदों ने विचार रखे, लेकिन चर्चा के साथ-साथ सत्ता और विपक्ष के बीच तीखे शब्दों का आदान-प्रदान भी होता रहा।

अधिकारियों के खिलाफ भी कार्रवाई हो : देवेन्द्र यादव

यादव ने उन अधिकारियों के खिलाफ भी कार्रवाई की मांग की, जिन्होंने दस्तावेजों को मंजूरी दी। उन्होंने कहा कि सार्वजनिक संस्थानों में जवाबदेही तय होना बेहद जरूरी है। बिना पारदर्शिता के विश्वास बहाल नहीं हो सकता। उन्होंने यह भी कहा कि एक तरफ कर्मचारी कल्याण कोष में लाखों रुपये का गबन हो रहा है। दूसरी ओर सेवानिवृत्त कर्मचारी पेंशन के लिए संघर्ष कर रहे हैं। पेंशन बुजुर्ग कर्मचारियों की जीविका का एकमात्र सहारा होती है। कांग्रेस ने आरोप लगाया कि डीटीसी में बढ़ते घाटे और भ्रष्टाचार पर न तो पिछली आम आदमी पार्टी सरकार ने ध्यान दिया और न ही मौजूदा भाजपा सरकार ने कोई ठोस रणनीति बनाई है।

आतिशी वीडियो विवाद में दिल्ली में सियासी संग्राम

» विधानसभा ने पंजाब के डीजीपी और वरिष्ठ अधिकारियों से मांगा जवाब

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा की विशेषाधिकार समिति ने आम आदमी पार्टी (आप) की वरिष्ठ नेता आतिशी के खिलाफ दर्ज एक प्राथमिकी के मामले में कड़ा रुख अपनाया है। समिति ने पंजाब के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) को राज्य पुलिस अधिकारियों के आचरण को लेकर लिखित स्पष्टीकरण देने का निर्देश जारी किया है। समिति ने इस मामले में पंजाब सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों से भी जवाब मांगा है।

इससे एक दिन पहले दिल्ली विधानसभा ने इस मामले में पंजाब के डीजीपी और पंजाब के अतिरिक्त मुख्य सचिव (गृह) के खिलाफ विशेषाधिकार जांच शुरू करने का निर्णय लिया था। मामला छह जनवरी को दिल्ली विधानसभा के शीतकालीन सत्र के दौरान सिख गुरु तेग बहादुर के बारे में आतिशी की कथित अपमानजनक टिप्पणी से जुड़ा है। पंजाब पुलिस ने भाजपा नेताओं द्वारा सोशल मीडिया पर साझा किए गए घटना के कथित वीडियो के आधार पर जालंधर में प्राथमिकी दर्ज की थी। वहीं आप का कहना है सत्र के भीतर की कार्यवाही सदन के नियमों के अधीन होती है और बाहरी पुलिस का इसमें हस्तक्षेप गलत है भाजपा बोली धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाना अपराध है और पुलिस अपनी कानूनी जिम्मेदारी निभा रही है । इससे पहले विधानसभा के अध्यक्ष विजेन्द्र गुप्ता ने पंजाब पुलिस की गई कार्रवाई से जुड़े मामले को विस्तृत जांच और रिपोर्ट के लिए विधानसभा की विशेषाधिकार समिति को सौंप दिया।

राजनीतिक टकराव जारी

यह मामला केवल कानूनी नहीं बल्कि राजनीतिक रंग भी ले चुका है। दिल्ली विधानसभा की समिति का मानना है कि सदन के भीतर दिए गए भाषणों और कार्यवाही के लिए किसी सदस्य के खिलाफ बाहरी पुलिस कार्रवाई करना संसदीय विशेषाधिकारों का हनन हो सकता है।

मप्र में 5 साल में 10 हजार से ज्यादा स्कूल बंद : सिंघार

» नेता प्रतिपक्ष ने मोहन सरकार को घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भोपाल। मध्य प्रदेश में स्कूली शिक्षा को लेकर एक बार फिर सियासत गरमा गई है। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने ट्वीट कर राज्य सरकार पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। उन्होंने दावा किया है कि पिछले पांच साल में देश में सबसे ज्यादा स्कूल मध्य प्रदेश में बंद हुए हैं, जो शिक्षा व्यवस्था की हकीकत उजागर करता है। उमंग सिंघार के मुताबिक, वर्ष 2020-21 से 2024-25 के बीच मध्य प्रदेश में 10,000 से अधिक स्कूल बंद हुए। यह आंकड़ा देश के सभी राज्यों में इस अवधि में बंद हुए स्कूलों में सबसे ज्यादा है।

बजट सत्र के दौरान सरकार ने संसद में बताया कि सिर्फ सरकारी स्कूलों की बात करें, तो प्रदेश में करीब 7,000 शासकीय स्कूल बंद किए गए, जबकि इसी दौरान पूरे देश में लगभग 18,000 स्कूल बंद हुए। निजी स्कूलों की स्थिति भी चिंताजनक बताई गई है। आंकड़ों के अनुसार, पांच साल में प्रदेश में 3,300 निजी स्कूल बंद हो गए। वर्ष 2020 में जहां निजी स्कूलों की संख्या 31,512 थी, वह 2024 में घटकर 28,212 रह गई नेता प्रतिपक्ष ने सरकार की नीतियों पर सवाल उठाते हुए कहा कि एक तरफ स्कूल शिक्षा विभाग का बजट लगातार बढ़ रहा है, वहीं दूसरी तरफ स्कूलों से बच्चों की संख्या तेजी से घट रही है। पिछले 10 साल में शासकीय स्कूलों से 54.27 लाख बच्चे कम हो गए हैं।

नगर निगम में लगे मुर्दाबाद के नारे

» समाधान दिवस में लोगों का प्रदर्शन

» रिटायर्ड टैक्स अधीक्षक को भेजे जा रहे दो बिल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। लखनऊ नगर निगम में आज यानी 6 फरवरी को संपूर्ण समाधान दिवस है। सैकड़ों लोग अपनी समस्याएं लेकर मुख्यालय पहुंचे हैं। यहां मेयर सुषमा खर्कवाल और नगर आयुक्त गौरव कुमार सुनवाई कर रहे हैं। इस दौरान सरोजनी नगर की अवध विहार कॉलोनी के लोगों ने नगर निगम मुर्दाबाद और पुलिस प्रशासन मुर्दाबाद के नारे लगाए। उनका कहना था कि कॉलोनी में लगातार पानी भरा हुआ है।

नगर निगम कोई सुनवाई नहीं कर रहा है। कई फरियादी सड़क न बनने की समस्या लेकर पहुंचे। कुछ लोग दुकान का किराये की भी समस्या लेकर पहुंचे। इस दौरान एक फरियादी हाउस टैक्स की शिकायत लेकर पहुंचे। वह खुद नगर निगम में टैक्स अधिकारी रह चुके हैं। उनके पिताजी की मृत्यु को 25 साल बीत चुके हैं लेकिन नगर निगम से अब भी उनके नाम हाउस टैक्स भेजा जा रहा है। भवन संख्या-82/39 ए, गुरुगोविंद सिंह मार्ग, लालकुआं वार्ड, जोन-1 के एक ही भवन की दो डिमाण्ड कम्प्यूटर में त्रुटिवश अंकित हैं। वर्ष 2001 से पूर्व उक्त भवन मेरे पिता विजय कुमार जायसवाल के नाम से अंकित था। वर्ष 1998 में उनकी मृत्यु के पश्चात् उक्त भवन मेरे नाम से एक नयी आई.डी. पर अंकित कर दिया गया। इस प्रकार मेरे पिता के नाम से उक्त बोगस डिमाण्ड अभी तक चली आ रही है।

सिद्धू के लिए भाजपा के दरवाजे बंद : कालिया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जालंधर। भाजपा के वरिष्ठ नेता मनोरंजन कालिया ने कहा कि नवजोत सिंह सिद्धू पहले भाजपा छोड़कर कांग्रेस में गए और वहां रहते हुए पार्टी व नेतृत्व पर लगातार हमले किए। अब राजनीतिक परिस्थितियां बदलने पर उनकी वापसी की बातें सामने आ रही हैं, लेकिन भाजपा अवसरवाद की राजनीति को स्वीकार नहीं करती।

उन्होंने कहा कि पार्टी की एक स्पष्ट विचारधारा और अनुशासन है, जिससे कोई समझौता नहीं किया जा सकता। उधर, नवजोत सिंह सिद्धू की ओर से भाजपा में वापसी को लेकर अब तक कोई आधिकारिक प्रतिक्रि या नहीं आई है। हालांकि कांग्रेस से उनकी बढ़ती दूरी और लंबे समय से राजनीतिक सक्रियता से दूर रहने के कारण अटकलों को बल मिला है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि 2027 के विधानसभा चुनाव से पहले ऐसे राजनीतिक संकेत और बयानबाजी और तेज हो सकती है।

आरसीबी ने दूसरी बार जीता डब्ल्यूपीएल खिताब

» दिल्ली लगातार हारी चौथा फाइनल

» बतौर कप्तान दो खिताब जीतने वाली खिलाड़ी बनीं स्मृति मंधाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

वडोदरा। आरसीबी की दिल्ली कैपिटल्स पर छह विकेट से जीत के साथ महिला प्रीमियर लीग के चौथे संस्करण का समापन हो गया। गुरुवार को वडोदरा के कोतांबी स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी दिल्ली कैपिटल्स ने 20 ओवर में चार विकेट पर 203 रन बनाए। जवाब में आरसीबी ने 19.4 ओवर में चार विकेट खोकर 204 रन बनाए और मुकाबला अपने नाम कर लिया।

आरसीबी ने दूसरी बार महिला प्रीमियर लीग का खिताब जीता है। इससे पहले टीम 2024 में दिल्ली के ही खिलाफ फाइनल मैच जीतकर चैंपियन बनी थी। इसी के साथ स्मृति मंधाना बतौर कप्तान दो डब्ल्यूपीएल खिताब जीतने वाली खिलाड़ी बन गईं। इस मामले में उन्होंने मुंबई की कप्तान हरमनप्रीत कौर की बराबरी कर ली, जिन्होंने 2023 और 2025 में खिताब जीता था। वहीं इस दौरान मंधाना ने डब्ल्यूपीएल इतिहास की पांचवीं बल्लेबाज बन गईं जिसने 1000 से ज्यादा रन बनाए। इसी के साथ वह नेट शीवर ब्रंट (1348), मेग लैनिंग (1200), हरमनप्रीत कौर (1193) और शेफाली वर्मा (1124) के क्लब में शामिल हो गईं। मंधाना फाइनल में सर्वाधिक रनों की पारी खेलने वाली बल्लेबाज भी बन गईं। इस मामले में उन्होंने जॉर्जिया वॉल को पीछे छोड़ा। इससे पहले, दिल्ली के फाइनल में जेमिमा रोड्रिग्स की तूफानी 57 रनों की पारी की मदद से 203 का स्कोर बनाकर इतिहास रचा। यह डब्ल्यूपीएल इतिहास के किसी प्लेऑफ मुकाबले में बनाया गया दूसरा सबसे बड़ा स्कोर है।

आरसीबी पर पैसों की बारिश दिल्ली को मिले 3 करोड़

महिला प्रीमियर लीग 2026 सिर्फ क्रिकेट का उत्सव नहीं, बल्कि पैसों और अवॉर्ड्स का भी उत्सव साबित हुआ। इस जीत के साथ ही आरसीबी खिलाड़ियों और टीम स्टाफ पर पुरस्कारों की बारिश भी हुई। वहीं, रनर अप बनी दिल्ली कैपिटल्स को भी तीन करोड़ रुपये और रनर अप शील्ड मिली। फाइनल और सीजन दोनों में स्मृति मंधाना और सोफी डिवाइन ने अवॉर्ड्स में अपना जलवा दिखाया। मंधाना को प्लेयर ऑफ द मैच, मोस्ट सिक्सेस ऑफ द मैच, और ऑरेंज कैप जैसे पुरस्कार मिले। वहीं सोफी डिवाइन ने मोस्ट वैलुएबल प्लेयर ऑफ द सीजन, मैच आईक्यू ऑफ द सीजन और पर्पल कैप अपने नाम किए। टीम अवॉर्ड्स में आरसीबी को जीत के लिए छह करोड़ रुपये, लिमिटेड एडिशन वॉच और विनिंग ट्रॉफी मिली।

कांग्रेस का भाजपा पर तीखा प्रहार जारी

खरगे व प्रियंका गांधी ने पीएम मोदी को घेरा, महासचिव बोलीं- प्रधानमंत्री को लोकसभा में बोलने का साहस नहीं

» शारीरिक हमले की योजना के आरोपों को पूरी तरह झूठ और बकवास बताया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। संसद में हंगामे के बीच कांग्रेस का भाजपा पर तीखा प्रहार जारी है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे से लेकर महासचिव प्रियंका गांधी तक पीएम मोदी पर हमलावर हैं। दोनों नेताओं ने नेता प्रतिपक्ष राहुलगांधी पर की गई टिप्पणियों पर विरोध दर्ज किया है।

वायनाड की सांसद ने पीएम मोदी पर शारीरिक हमले की योजना के आरोपों को पूरी तरह झूठ और बकवास बताया है। इस बीच, विपक्ष केंद्र सरकार के खिलाफ राहुल गांधी को निचले सदन को संबोधित करने से कथित तौर पर रोकने के लिए विरोध प्रदर्शन कर रहा है, जिसमें पूर्व सेना प्रमुख जनरल एमएम नरवणे के 2020 के चीन गतिरोध पर अप्रकाशित संस्मरण का हवाला दिया गया है। उन्होंने संसद परिसर में संवाददाताओं से कहा कि यह पूरी तरह झूठ है। प्रधानमंत्री पर हाथ उठाने या उन्हें चोट पहुंचाने या ऐसी किसी चीज का कोई सवाल ही नहीं है। इसलिए, किसी के लिए भी यह कहना कि ऐसी कोई योजना थी, बिल्कुल गलत है। ऐसी कोई योजना नहीं थी। उनका कहना था कि यदि आप अपने सदस्यों को खड़े होकर बकवास करने की अनुमति देंगे, तो विपक्ष के लोग विरोध करेंगे।'

लोस अध्यक्ष ओम बिरला के पीछे छिप रहें हैं पीएम

कांग्रस सांसद ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री लोकसभा में बोलने का साहस नहीं होने के कारण अध्यक्ष ओम बिरला के पीछे छिप रहे हैं, जिसके चलते धन्यवाद प्रस्ताव बिना उनके जवाब के ही पारित हो गया। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर तीखा हमला करते हुए उन पर लोकसभा को संबोधित करने का साहस न होने का आरोप लगाया। संसद परिसर में पत्रकारों से बात करते हुए प्रियंका गांधी ने कहा कि प्रधानमंत्री स्पीकर के पीछे छिप रहे हैं। कल उनमें सदन में आने का साहस नहीं था क्योंकि तीन महिलाएं सदन के सामने खड़ी थीं। यह कैसी बकवास है? कोई चर्चा नहीं हो रही है क्योंकि सरकार चर्चा नहीं होने देना चाहती।

विपक्ष की आवाज दबाने की कोशिश : जयराम

कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने गुरुवार को चेतावनी दी कि अगर लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी को 2020 में चीन के साथ हुए गतिरोध पर संसद में अपनी बात रखने की अनुमति नहीं दी गई तो सदन के चलने की संभावना बहुत कम रह जाएगी। कांग्रेस सांसद जयराम रमेश ने कहा कि संसद में केवल एक ही मुद्दा है जो विपक्ष को परेशान कर रहा है, और वह यह है कि लोकसभा में विपक्ष के नेता को बोलने से रोका गया है। राज्यसभा में विपक्ष के नेता ने भी यही मुद्दा उठाया। राज्यसभा में विपक्षी सांसद भी आज इसी मुद्दे पर सदन से बाहर चले गए। रमेश ने आगे कहा कि सभी विपक्षी दल इस बात पर एकमत हैं कि अगर लोकसभा सांसद को बोलने नहीं दिया गया, तो सदन के चलने की संभावना बहुत कम है। कांग्रेस ने संसद में कई मुद्दे उठाए हैं, जिनमें से एक प्रमुख मुद्दा पूर्वी लद्दाख में 2020 के चीन गतिरोध पर एमएम नरवणे के अप्रकाशित संस्मरण से जुड़ा है। कांग्रेस का कहना है कि लोकसभा सांसद राहुल गांधी को पूर्व सेना प्रमुख जनरल एमएम नरवणे (सेवानिवृत्त) के उद्धरण देने से कई बार रोका गया। उन्होंने कहा कि मैं प्रधानमंत्री और भाजपा को याद दिलाना चाहता हूं कि जून 2004 में तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने धन्यवाद प्रस्ताव का जवाब इसलिए नहीं दिया था क्योंकि उन्हें जवाब देने से रोका गया था। 2005 में तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने राष्ट्रपति को दो बार धन्यवाद दिया था, क्योंकि वे 2004 में धन्यवाद नहीं दे पाए थे।

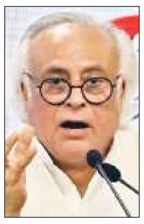

भूकंप के झटकों से हिला गोंडा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

गोंडा। यूपी के जिला गोंडा में शुक्रवार की सुबह भूकंप के झटके महसूस किए गए। राजधानी लखनऊ तक इसका असर रहा। हालांकि, अभी तक किसी भी तरह के नुकसान की सूचना नहीं है। भूकंप की तीव्रता 3.7 मापी गई। इसका केंद्र इटियाथोक क्षेत्र के इटहिया नवीजोत गांव के आसपास बताया गया है।

» 3.7 रही तीव्रता इटियाथोक में था केंद्र

गोंडा में मौसम की पलटी, कोहरे और सर्द हवाओं से बढ़ी ठिठुरन; ट्रेनें सुबह-सुबह अचानक धरती में कंपन महसूस होते ही लोग घरों से बाहर निकल आए। हालांकि राहत की बात यह रही कि अब तक किसी प्रकार की धनहानि या जनहानि की सूचना नहीं मिली है। जिला प्रशासन के अनुसार स्थिति पूरी तरह सामान्य है और कहीं से किसी नुकसान की जानकारी प्राप्त नहीं हुई है। आपदा विशेषज्ञ ने बताया कि भूकंप की तीव्रता कम होने के कारण कोई नुकसान होने की सूचना नहीं है। फिर भी प्रशासन सतर्क है और संबंधित विभागों से जानकारी ली जा रही है। उन्होंने लोगों से अफवाहों पर ध्यान न देने और सतर्क रहने की अपील की।

गहराई 10 किलोमीटर थी

इसकी गहराई 10 किलोमीटर थी। एनसीएस की ओर से सोशल मीडिया एक्स पर दी अन्य पोस्ट में बताया गया है कि उत्तराखंड के बागेश्वर में 3.4 और शिनजियांग क्षेत्र में भी 4.4 तीव्रता के भूकंप दर्ज किए गए।

राजधानी तक महसूस हुए झटके

गोंडा में एपिसेंटर होने के कारण लखनऊ तक भूकंप के झटके महसूस किए गए हैं। राजधानी में सुबह-सुबह आए झटकों के कारण लोग अपनी घरों के बाहर निकल आए। इन इलाकों में सुबह-सुबह आए भूकंप के झटके म्यांमार में 5.9 तीव्रता के एक शक्तिशाली भूकंप के कुछ दिनों बाद आए हैं। इस भूकंप के झटके कोलकाता और बांग्लादेश के ढाका में भी महसूस किए गए थे।

जन सुराज को सुप्रीम कोर्ट की कड़ी फटकार

बोली शीर्ष अदालत- चुनाव में सब कुछ हार गए, अब पब्लिसिटी के लिए यहां आए हैं

» सीजेआई सूर्यकांत ने पीके से कहा, जनता ने तो कर दिया खारिज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 को चुनौती देने पहुंची प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी को सुप्रीम कोर्ट में शुक्रवार को कड़ी फटकार सुननी पड़ी। मुख्य न्यायाधीश सूर्य कांत की अध्यक्षता वाली पीठ ने याचिकाकर्ता से तीखे सवाल पूछे और कहा कि राजनीतिक लाभ के लिए सुप्रीम कोर्ट को मंच नहीं बनाया जा सकता है।

सुनवाई के दौरान सीजेआई सूर्य कांत ने जन सुराज पार्टी को खरी-खरी सुनाई और कहा कि जनता ने आपको खारिज कर दिया है। इसलिए आप लोकप्रियता हासिल करने के लिए सुप्रीम कोर्ट जैसे न्यायिक मंचों का सहारा ले रहे हैं। साथ ही कहा कि जब पार्टी चुनाव में अपना सब कुछ हार गई तब वो यहां आ गई. आपको सद्भावना के बारे में भी बताना होगा। उन्होंने कहा कि फ्रीबीज (मुफ्त योजनाओं) के मुद्दे की हम जांच कर रहे हैं, लेकिन यहां ऐसा मामला है जहां एक राजनीतिक पार्टी, जो चुनाव में सब कुछ हार गई, हमारे सामने आ गई है। हम राजनीतिक दलों के कहने पर फ्रीबीज के मुद्दे की जांच नहीं करना चाहते हैं। इसके साथ ही जस्टिस जॉयमाल्या बागची ने सवाल किया कि इलेक्शन पीटिशन के नियमों की किस धारा के तहत पूरे चुनाव को रद्द करने की मांग की जा सकती है। इस पर वरिष्ठ वकील सीयू सिंह ने कहा कि वह इस विशेष प्रार्थना पर जोर नहीं देंगे, लेकिन याचिका में अन्य राहतें भी मांगी गई हैं।

उन्होंने तर्क दिया कि मामला भ्रष्ट आचरण से जुड़ा है, जो स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव तथा समान अवसर (लेवल प्लेइंग फील्ड) को प्रभावित करता है।

चेन्नई में सैकड़ों कौवों की मौत से मचा हड़कंप

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में शुक्र वार को उस वक्त दहशत फैल गई जब शहर के विभिन्न हिस्सों में सैकड़ों कौवे अचानक मृत पाए गए। लैब रिपोर्ट में एच-5एन-1(एवियन इन्फ्लूएंजा) वायरस की पुष्टि होने के बाद स्वास्थ्य विभाग ने हाई अलर्ट जारी कर दिया है। पक्षियों की इस रहस्यमयी मौत ने पूरे इलाके में बर्ड फ्लू के संक्रमण का बड़ा खतरा पैदा कर दिया है।

स्वास्थ्य अधिकारियों ने इस बीमारी को फैलने से रोकने के लिए आम जनता के लिए एक एडवाइजरी जारी की है। अधिकारियों ने निर्देश दिया है कि आगे संक्रमण को रोकने के लिए कौवों और पोल्ट्री के सभी शवों को बायोसिक्योरिटी प्रोटोकॉल के अनुसार या तो जला दिया जाए या गहरे गड्ढे में दफना दिया जाए। लोगों को मरे हुए पक्षियों को छूने या संभालने से बचने की सख्त सलाह दी गई है और किसी भी नए मामले की जानकारी तुरंत स्थानीय अधिकारियों को देने का आग्रह किया गया है। इन नतीजों के बाद, केंद्रीय पशुपालन मंत्रालय ने तमिलनाडु के मुख्य सचिव को पत्र लिखकर इस बीमारी को फैलने से रोकने के लिए तत्काल और व्यापक फील्ड निगरानी करने को कहा है।

घूसखोर पंडत वेब सीरीज पर केस दर्ज

» थाने में तैनात इंस्पेक्टर विक्रम सिंह ने दर्ज की रिपोर्ट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के हजरतगंज थाने में घूसखोर पंडत वेब सीरीज के खिलाफ केस दर्ज कराया गया है। यह किसी व्यक्ति ने नहीं बल्कि थाने में तैनात इंस्पेक्टर विक्र म सिंह ने दर्ज कराया गया।

इंस्पेक्टर विक्र म सिंह ने समाज में बढ़ते आक्रोश और अपमानजनक शब्दावली का संज्ञान लेते हुए खुद वादी बनकर एफआईआर दर्ज कराई है। इसके बाद उनकी चर्चा तेज हो गई। दरअसल, इस वेब सीरीज के प्रचार के दौरान भाषा और शीर्षक पर विवाद खड़ा होता दिख रहा है। सोशल मीडिया पर मुद्दा खासा गरमाया हुआ है। पुलिस ने इसे सामाजिक सद्भाव के लिए खतरा माना है। अब दर्ज केस के कारण इस सीरीज पर विवाद गहराता दिखने लगा है।

दिल्ली से लेकर बिहार तक खुली सिस्टम की पोल

राजगीर में धर्मशाला के कमरे में मिले चार जैन सैलानियों के शव

» राजधानी में लापरवाही के गड्ढे में गई एक और जान

» दोनों राज्यों में निशाने पर एनडीए सरकार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली से लकर बिहार तक सरकारी व्यवस्था पर एकबार फिर सवाल उठ गया है। ये भी विडंबना है की दोनों राज्यों में भाजपा की एनडीए सरकार है। जो दावा करती है कि कानून-व्यवस्था चाक चौबंद है। किसी भी नागरिक की सुरक्षा पर किसी भी प्रकार की कोताही नहीं बरती जाएगी। पर दोनों ही आम लोगों को जान से हाथ धोना पड़ा।

बिहार के प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय पर्यटन स्थल राजगीर में शुक्र वार को एक दर्दनाक घटना सामने आई। दिगंबर धर्मशाला के एक कमरे में चार जैन सैलानियों के शव मिलने से पूरे इलाके में हड़कंप मच गया। मृतकों में दो पुरुष और दो महिलाएं शामिल हैं। जानकारी के अनुसार, यह दुखद घटना राजगीर थाना क्षेत्र की दिगंबर धर्मशाला में घटी। मृतक जैन धर्म के अनुयायी थे और 31 जनवरी को धार्मिक यात्रा पर राजगीर आए थे। स्थानीय लोगों और अन्य पर्यटकों में चार शवों के मिलने के बाद भय और दहशत का माहौल फैल गया। गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए उस कमरे को पूरी तरह से सील कर दिया। किसी को भी कमरे के अंदर जाने की अनुमति नहीं दी गई। डीएसपी राजगीर और राजगीर थाना अध्यक्ष के साथ भारी संख्या में पुलिस बल मौके पर तैनात किया गया।

जल बोर्ड के गड्ढे में गिरकर एक की मौत

दिल्ली के जनकपुरी में जल बोर्ड के गड्ढे में गिरकर जान गंवाने वाले कमल चंदानी (25 वर्ष) के परिजनों ने पुलिस पर गंभीर आरोप लगाए हैं। मृतक के भाई ने कहा, उसका भाई एचडीएफसी बैंक की रोहिणी ब्रांच में असिस्टेंट मैनेजर था। हादसे के बाद पर्दे लगाए गए, पीछे वाला पर्दा लगा हुआ था बस। जब मैंने आखिरी बार उससे बात की थी, तो कमल बोला था कि वह 10 मिनट में घर पहुंच जाएगा। जब मैंने उसे रात 12:30 बजे दोबारा फोन किया, तो उसने फोन नहीं उठाया। हम परेशान हो गए, फिर हमने उसकी तलाश शुरू की। मैं पहले रोहिणी स्थित उसके कार्यालय गया, फिर जनकपुरी पुलिस स्टेशन गया। आरोप लगाया कि पुलिस ने हमको इस इलाके में उसकी आखिरी लोकेशन बताई, लेकिन उसे ढूंढने में मदद नहीं की। हम उसे ढूंढते रहे, लेकिन वह नहीं मिला। यह घोर लापरवाही है। मेरा भाई पागल नहीं था कि वह जानबूझकर गड्ढे में गाड़ी गिरा दे।

महाराष्ट्र कार्यालय :- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। विधि सलाहकार : मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष : 0522- 4078371 | Email : daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।
स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा